रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

* षष्टोऽध्यायः *

श्री मैथिली जू के पूर्व राग विप्रलम्भ प्रकरणम्

छन्द चौबोलाः—

अब श्री सूत रहस्य सरस अति बर्णन चाहत ।
उत्तरार्ध कमनीय मधुर रस हृदय सराहत ॥ १ ॥
सर्व रसाश्रय निखिल भूत आश्रय रघुनन्दन ।
जगरत्तक सुखसदन प्रीतिपालक जनरंजन ॥ २ ॥
रत्ताकी करिविनय मंगलाचरण करत पुनि ।
बोलत बचन बिशेप बिमल सुखश्रवत श्रवण सुनि ॥ ३ ॥
जासु सरस्वति जीभ बोध निर्मल हिय जाको ।
उभय हस्थ दत्तिणा मधुर रस बपु सुठि ताको ॥ ४ ॥
श्री शृँगार रस राज देह तीरथ पद गाये ।
सबही को वर भाग भाल वाको बतलाये ॥ ५ ॥
श्री कमला उर जासु लाज संकोच रहित अति ।
कृपा परम कमनीय सदा जाके दृग निवसति ॥ ६ ॥
इमि अद्भुत सौन्दर्य सिन्धु गुनशील उजागर ।
श्री कौशल्या हृदय प्रेम वर्धक रस सागर ॥ ७ ॥
दायक परमानन्द अखिल अघ बिघ्न नशावन ।
करुणाकर मन हरन स्वजन हिय मोद बढ़ावन ॥ ८ ॥
हम सब की सब भाँति करैं रत्ता सोइ रघुवर ।
दानी दीन दयालु दास हित रत उदार तर ॥ ९ ॥

पुनि निज श्री आचार्य चरण पंकज उर ध्यावत ।
करि प्रणाम भरि नेह बार बहु शीश झुकावत ।।१०।।
आगम निगम पुराण तत्त्व ज्ञाता प्रवीण वर ।
दीर्घआयु सब धर्म पन्थ दर्शावतसुचि तर ।।११।।
दायक परम प्रकाश भक्त जन बन्धु कृपा कर ।
नाशक तिमिर महानमोह बर्धकसुज्ञान वर ।।१२।।
गुरु वर श्री मद् व्यास करौं शत कोटि प्रणामा ।
भक्ति ज्ञान प्रद सरस हृदय दायक विश्रामा ।।१३।।
करि सु मंगला चरण बदत श्री सूत सुजाना ।
शौनकादिक मुनिराज बचन कीजै मम काना ।।१४।।
करि मन बुधि चित सावधान सुनिये रहस्य वर ।
पावन अति रमणीय प्रेम बर्धक सुमंजु तर ।।१५।।
बशि विविक्त करि कृपा सहित आदर श्री गुरुवर ।
दया भाव बश मोहिं सुनायो रहस ललित तर ।।१६।।
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषन चरित्र वर ।
परम एकान्तिक सरस मधुर सुख सदन नेह कर ।।१७।।
सुकृत पुंज अति उदय होत जग में जाको जब ।
कदा बनति संयोग श्रवण मधि परत चरित तव ।।१८।।
बड़भागी अति सुकृत वान तिनहीं को भावै ।
अनअधिकारी मलिन हृदय उनको न सुहावै ।।१९।।
याते कोइ कोइ लहत रहस वर सब नहिं पावत ।
सन्तन कृपा कटाक्ष केलि हिय में उमगावत ।।२०।।

जे रसज्ञ मति धीर सरस अति सरल जासु उर।
परम्परा से सुनत सोई सज्जन प्रवीण तर ॥२१॥
परम प्रकाश स्वरूप चरित उत्तम जग भूषण।
प्रीति रीति रस दान परम पावन निरदूषण ॥२२॥
श्री रघुवर की परम प्रिया मिथिलेश दुलारी।
पराशक्ति अह्लाद रूप गुनशील उजारी ॥२३॥
क्षमा दयामय मूर्ति कृपा रस प्रेम स्वरूपा।
मृदु चित सरल स्वभाव सरस अनवद्य अनूपा ॥२४॥
वात्सल्य सौहार्द सदन सुषमा सुख दानी।
आश्रित जन मन मोद भरनि सुचि अमल सयानी ॥२५॥
प्रगटि जनकपुर धाम कीन शिशु चरित सुहावन।
मातु पितहिं सुख दियो सखिनसँग अतिमन भावन ॥२६॥
करहिं केलि कमनीय सरस अनुदिन अधिकाई।
परिजन पुरजन नारि सबनि दृग सुफल बनाई ॥२७॥
सखी सहेली सकल प्राण हूते प्रिय मानत।
सबहीं को मैथिली सदा अनुजा सम जानत ॥२८॥
सब ही की रुचि राखि सबहिं सुचि नीति पढ़ाई।
वात्सल्य युत सतत प्रीति पालहिं सुखपाई ॥२९॥
मातु पिता परिवार बन्धु परिकरन सुखारी।
कीन सबहिं सब भाँति सदा श्री जनक दुलारी ॥३०॥
भईं अवस्था युक्त करत लीला मन हारी।
पाले बिहँग अनेक भाँति सुन्दर रुचिकारी ॥३१॥

सारस सुआ सु ललित सारिका पालि पढ़ाईं ।
करैं बिबिधि स्तोत्र पाठ निरखत मन भाईं ॥३२॥
अति प्रिय मधुर सुबोल सुनत श्रवणन सुखकारी ।
गये विहँग श्री अवध लखे रस निधि धनुधारी ॥३३॥
देखे रास विलास चरित अतिमधुर सुभगतर ।
सुनी कथा बहु भाँति परम रस मय प्रमोद कर ॥३४॥
आये मिथिला माहिं चरित सब सियहिं सुनाये ।
सुनि कमनीय रहस्य मैथिली अति सुखपाये ॥३५॥
तपस्वनी कोइ एक परम पण्डिता सयानी ।
तेज पुंज सम रूप शील गुण निधि छबि खानी ॥३६॥
सामुद्रिक शुभ शास्त्र केर लच्चण भल जानहिं ।
नृप गृह को व्यवहार विज्ञ तेहि सब सनमानहिं ॥३७॥
सिय सहचरिन मझार रहे बनि परम प्रवीना ।
सखी भाव सम्पन्न कहइ शुभ चरित नवीना ॥३८॥
राजकुमारिन शुभाचरण सिखवन हित राजा ।
शिच्छइ शास्त्र सु ज्ञान वाहि राखेउ तेहि काजा ॥३९॥
चक्रवर्ति साकेत नाथ सुत राम कुँवर के ।
जानइ सो सब कर्म धर्म छबि धाम सुघर के ॥४०॥
श्री विदेह महराज कीर्ति रूपा वैदेही ।
समय पाय एकान्त एक दिन परम सनेही ॥४१॥
श्री अवधेश कुमार राम अभिराम श्याम तन ।
रूप शील गुण सकल सुनाये अति प्रसन्न तर ॥४२॥

क्षमा दया सौन्दर्य परम सौहार्द मधुर तर।
कोटि कोटि कन्दर्प दर्प हर रूप रसिक वर ॥४३॥
तब से श्री मैथिली सतत एकान्त बास कर।
एकासन दृढ़ बैठि बुद्धि चित सुचि सनेह भर ॥४४॥
रघुनन्दन स्मर्ण माहिं सर्वथा लगाई।
जग से भईं उदास देह की सुरति भुलाई ॥४५॥
खान पान सुख स्वाद बसन भूषन बिसराये।
चहत नित्य संयोग सदा मन रहति लगाये ॥४६॥
मृदु मुसुकान समेत हृदय मुख पंकज ध्यावैं।
मधुर माधुरी निरखि निरखि अतिसय सुखपावैं ॥४७॥
यद्यपि पिय अति दूरि तदपि गुण शील बिचारी।
कदा स्वभावहिं देखि हँसहिं मिथिलेश कुमारी ॥४८॥
प्रवल भावना मध्य मिलत निशि दिवस एक रस।
सुन्दर श्याम सुजान मधुर मूरति उर में बस ॥४९॥
दूर देश में बास तदपि स्मरण सुबल से।
सन्मुख खड़े लखात मन्द विहँसत अंचल से ॥५०॥
परम सुधा मय गुण समूह से रूप रसिक वर।
मृग नयनी मैथली हृदय कर्षत प्रमोद कर ॥५१॥
जिमि रबि किरण पसार भूमि रस कर्षत अहहीं।
चुम्बक खैंचत लोह निजै गुण सब कोइ कहही ॥५२॥
सुठि भावना प्रकर्ष दशा साक्षात समाना।
कदा विरह अति जगै पदारथ स्वाद भुलाना ॥५३॥

प्रीतम गुण गण मधुर अमिय सम सुखद सुहावन ।
आस्वादन नित करहिं सतत सब बिधि मन भावन ॥५४॥
जिमि पियूष करि पान बस्तु सव फीकी लागैं ।
तिमि सिय को सुख निरस लगैं पिय गुणरस पागैं ॥५५॥
सकल जगत के स्वाद भोग सुख पिय नहिं मानत ।
सब से अति वैराग्य भयेउ पिय में चित सानत ॥५६॥
राज हंसिनी काहिं काग भोजन न सुहावैं ।
तिमि सिय को या जगत केर सुख स्वाद न भावैं ॥५७॥
यहि विधि काम महान सुबल सब भाँति दिखायो ।
गौरी वय मैथिली हृदय मधि राग जगायो ॥५८॥
तो मनोज बलवान नायिकन क्यों न सतावै ।
जब की वालन हृदय मध्य उत्पात मचावै ॥५९॥
पूर्व नित्य संयोग केर शुभ संस्कार उर ।
पिया मिलन की प्रवल कामना दुसह विरह जर ॥६०॥
वाणन मारि मनोज हृदय को व्यथित बनायो ।
मीनध्वज बलवान सर्वथा स्वबस बनायो ॥६१॥
हे जीवन धन प्राणनाथ रसिकेश सुभग तर ।
तजि मो कहँ हृदयेश गये कहँ परस सु छबिधर ॥६२॥
करहिं विस्मरण व्यथित हृदय निशि नींद न आवै ।
प्रीतम प्रबल वियोग बिबश अति खेद सतावै ॥६३॥
कुछ क्षण अति सन्तप्त कढ़ा तन स्वेद अपारा ।
कबहुँ मोह बश मुर्छि गिरहिं तन की न सँभारा ॥६४॥

कदा दीर्घ लै स्वाँस निपट एकान्त सदन में।
उच्चश्बर करि रूदन दुखी होवत अति मन में ॥६५॥
सेवहिं सुठि सहचरी बिना अपराध तिनहिं अति।
कदा करहिं अति क्रोध सबनि डाँटहिं धमकावति ॥६६॥
बोलहिं अटपट बैन कबहुँ अति शान्त रूप धरि।
कबहुँ मूक हो रहहिं खड़ी अति अचल नैन भरि ॥६७॥
बूझहिं सखी सुजान तिनहिं कछु मर्म न कहहीं।
कहहिं सहचरी बात सुनहिं नहिं चित नहिं धरहीं ॥६८॥
सेवहिं सखी सनेह सनी बहु धर्म कहानी।
प्रमुदित रहीं सुनाय सुनहिं नहिं खेद समानी ॥६९॥
परम प्रिया सखि बृन्द करन सिय को प्रसन्न अति।
गावहिं भरि अनुराग रागिनी राग सरस मति ॥७०॥
नृत्यहिं भाव बताय केलि कौतुक कलोल करि।
देखहिं नहिं मैथिली हृदय विरहाग्नि प्रवल जरि ॥७१॥
श्री अवनीश कुमार सहज सुकुमार मधुर तर।
रूप अनूप अपार हृदय विहरत सनेह भर ॥७२॥
भूत पूर्व भी रहे प्राण बल्लभ रघुनन्दन।
अस्मिन काल वियोग भयो याते करि क्रन्दन ॥७३॥
निशि दिन रहीं बिताय देह की दशा भुलानी।
खिन्न चित्त लखि सखीं सकल मन में सकुचानी ॥७४॥
तद्यपि परम प्रवीण सहचरी सहज सयानी।
लच्चण हृदय बिचारि काम मोहित पहिचानी ॥७५॥

मातु सुनैना पास जाय सब कहा बखानी ।
सुनि माता एकान्त पाय सिय को उर आनी ॥७६॥
अंक बिठाय सनेह सहित बूझति दुलराई ।
अहो वत्स तव दशा भई अस हेतु बुझाई ॥७७॥
कहहु मोहिं तजि लाज सोच संकोच मिटाई ।
किमि ऐसी तव दशा भई नहिं परत जनाई ॥७८॥
अहो पुत्रि तव चित्त गुफा में कौन समायो ।
उर से भय बिसराय लाड़िली मोहिं बतायो ॥७९॥
जो कछु तव मन माहिं छिपेउ सो मोहिं बताबहु ।
खिन्न चित क्यों रहत सदा मोसे न दुराबहु ॥८०॥
जानौं दुख को हेतु यतन करि तुरत नसावौं ।
सकल सोच करि दूरि हृदय में मोद बढ़ावौं ॥८१॥
निश्चय योगि बिदेह बंश मधि सपनेहुँ माहीं ।
दुराचरण रत होत कदा कबहूँ कोउ नाहीं ॥८२॥
रोग शोक अरु पाप ताप चिन्ता की प्रीड़ा ।
भूत प्रेत ग्रह चाल होत नहिं यह अति ब्रीड़ा ॥८३॥
कमला केर प्रकोप दीनता निकट न आवत ।
अति दरिद्रता रूप रोग काहू न सतावत ॥८४॥
फिर तुमरे मन माहिं खेद क्यों हेतु बताओ ।
कहो हृदय को मर्म सकल संकोच बहाओ ॥८५॥
सुनत मातु के बैन सिया हिय परम लजानी ।
बोलीं अति संकोच भरीं कछु हँसि मृदु बानी ॥८६॥

अहो मातु मम देह माहिं नहिं रोग न व्याधी।
नहिं कछु भयेउ बिकार नहीं ग्रह केर उपाधी ॥८७॥
देह कृशित को हेतु माय मैं काह बताबौं।
मम यहि भाँति स्वाभाव समय एकान्त बिताबौं ॥८८॥
अस कहि पुनि भई मौन बचन मुख हे नहिं आयो।
सुनत मातु वर बैन हृदय अनुमान लगायो ॥८९॥
दिव्य ज्ञान से निरखि लली को परम प्रभावा।
मधुर स्वभाव निहार हृदय में अति सुख पावा ॥९०॥
लज्जित सिय को देखि मातु हँसि कण्ठ लगाई।
चूमि सरस मुख कंज शीश सूंघत सुखपाई ॥९१॥
फेरति शिर कर कमल प्यार बहु भाँति दिखाई।
दै आश्वासन बिबिध भाँति सिय को दुलराई ॥९२॥
दीनो आशिर्वाद होउ चिरंजीव दुलारी।
यहि विधि पावन रहै सर्वदा बुद्धि तुम्हारी ॥९३॥
अस कहि गइ निजमहल मध्य जहँ नृपति मुदितमन।
ध्यावत प्रभु परमेश सर्व व्यापक सनेह घर ॥९४॥
चिन्तत चरण सरोज चारु चित मधि योगीशा।
पूरण परमानन्द सदन सब बिधि जगदीशा ॥९५॥
वन्दि सुनयना चरण लली को चरित बतायो।
परम प्रभाव अपार जन्म को हेतु सुनायो ॥९६॥
यद्यपि मम लाड़िली अभी गौरी वय रूपा।
तदपि सियानी भई खोजिये वर अनुरूपा ॥९७॥

विद्या उत्तम काहिं सु पात्रहिं दान देत सब ।
तिमि सुयोग्य वर समुझि सुता अर्पण कीजै अब ॥९८॥
जिमि समर्थ को भूमि वीर को कीर्ति वरण करि ।
तिमि सुन्दर वर काहिं सुता दीजै उमंग भरि ॥९९॥
यद्यपि षष्टम वर्ष केर मम सिया दुलारी ।
दिव्य शील गुण युक्त रूपनिधि अति सुकुमारी ॥१००॥

दो०–षोडस वर्ष समान बपु, सिय को परत दिखाय ।
याते ब्याह उछाह हित, कीजै वेगि उपाय ॥ १ ॥

कोमल चित शुचि भाव सरस सुठि सरल सयानी ।
हम सब की यश रूप होयगी सब सुख दानी ॥ १ ॥
सर्व दोष दुख रहित अमायिक रूप उजारी ।
भूपति मम लाड़िली सिय मोहिं प्राण अधारी ॥ २ ॥
तिमि सुयोग्य वर होय अप्राकृत रूप सुजाना ।
शुभलक्षण सम्पन्न शील गुण निधि बलवाना ॥ ३ ॥
जिमि लक्ष्मी पति भये शील निधि विष्णु सुजाना ।
आदि देव भगवान कृपाकर रूप निधाना ॥ ४ ॥
तिमि मम कन्या काहिं नाथ चाहिय उत्तम वर ।
चिन्तन कीजै वेगि आप योगीश मोह हर ॥ ५ ॥
अब बिलम्ब जनि होय काल अतिक्रमण न कीजै ।
सुद्रुत योग वर काहिं नाथ कन्या धन दीजै ॥ ६ ॥
अपर उपाय न अहै यही बिधि एक सुहाई ।
योग्य सुवर को खोजि दान कीजै हर्षाई ॥ ७ ॥

इमि वर बचन विनीत प्रेम रस सने सुहावन।
श्री विदेह नृप सुने प्रिया मुख से अति पावन ॥ ८ ॥
चिन्तन करि पुनि बदत सुनहु हे प्राण पियारी।
दुर्निवार यह कार्य लखेउ मैं हृदय बिचारी ॥ ९ ॥
यह चिन्ताचित चढ़ी सतत मम उरहिं कपावै।
मम कन्या अनुरूप सु वर जग में न दिखावै ॥१०॥
जिमि मम लली अनूप अलौकिक रूप निधाना।
कहँ ऐसो वर मिलै रूप निधि सुघर सुजाना ॥११॥
यह चिन्ता निशि दिवस सतत मेरे चित माहीं।
बनी रहति अति प्रबल एक साधन न लखाहीं ॥१२॥
माता पिता सु बन्धु स्वजन बहु करत उपाई।
पर कन्या अनुरूप पुरुष कबहूँ कोउ लहई ॥१३॥
होब सुता यदि भाग्यवान तो बिना प्रयासा।
योग्य सुखद वर मिलै सतत मुद मोद प्रकासा ॥१४॥
याते त्यागहु सोच हृदय में करहु बिचारा।
जिन दीनी मोहिं सुता वही वर देहिं उदारा ॥१५॥
जिमि कन्या गुणवती परम लच्छण सम्पन्या।
सकल कला भण्डार ज्ञान गम्या अति धन्या ॥१६॥
भाग्य वती कमनीय नेह निधि रूप उजारी।
तो अवश्व पाइहैं यतन बिन वर अनुहारी ॥१७॥
निज मन धैर्यसु धरहु तजहु जिय सोच अपारा।
आसुतोष भगवान कृपा निधि परम उदारा ॥१८॥

वे करि कृपा अपार बनइहैं काज हमारे ।
प्रभु अभीष्ट वर दान मदन मद मर्दन हारे ॥१६॥
कहि वर बचन बिबेक प्रेम रस सने सुहाये ।
रानिहिं कियो प्रबोध सोच संकोच मिटाये ॥२०॥
पुनि कन्या के योग्य सुवर की प्राप्ति करन हित ।
गमने श्रीशिव चरण शरण में अति प्रमुदित चित ॥२१॥
संकट सोचन सँकोच समन सब सिधि दातारा ।
अजर अमर अनवद्य अमल शिव परम उदारा ॥२२॥
त्रिविधि जीव जगमध्य सकल पूजत सुख मानी ।
निज निज अभिमत लहत सदा शिव अवढर दानी ॥२३॥
शिव पद पंकज ध्याय नींद वश भये भुआला ।
शम्भु दीन निज दर्श स्वप्न मधि परम रसाला ॥२४॥
नख सिख ललित शृँगार भाल में तिलक लगाये ।
सुमिरत सीताराम नाम आनन्द समाये ॥२५॥
परम वैष्णव चिह्न सकल धारे अँग माँहीं ।
ध्यावत सिय रघुवीर चरण पंकज पुलकाहीं ॥२६॥
नृप को आज्ञा दई धनुष मम तव गृह माहीं ।
पूजित सबसे भयो काल बहु बीत्यो आहीं ॥२७॥
तुम ऐसो पन करहु नृपति जो धनुष उठावै ।
श्रवण प्रयन्त चढ़ाय खैंचि दो खण्ड बनावै ॥२८॥
सोइ मम कन्या वरै प्रतिज्ञा यही हमारी ।
यह प्रण अभिमत दान होय तुमको सुख कारी ॥२६॥

यही प्रतिज्ञा पूर्ण करन हित सुवर सुजाना।
स्वयं पास आइहैं रूप गुण शील निधाना ॥३०॥
कन्या अरु रावरो मनोरथ सफल बनइहै।
यह प्रण परम पुनीत शोच संकोच मिटइहै ॥३१॥
सदा सत्य मम बचन त्यागि संसय मन माहीं।
दृढ़ निश्चय मानिये मृषा हम भाषत नाहीं ॥३२॥
जब शिव सुखद सुजान कहा यहि भाँति बखानी।
गुनि नृप हिय हर्षाय मोद अपने उर मानी ॥३३॥
चित में निश्चय कियो यही प्रण अभिमत दायक।
सब ही को अति सुखद सतत शंकर सब लायक ॥३४॥
याही प्रण के ब्याज निगम जेहि नेति बखाना।
सो अइहैं मम द्वार कृपा निधि परम सुजाना ॥३५॥
तोरि धनुष सिय ब्याहि सबहिं सुख सिन्धु डुबइहैं।
लखि छबि सिन्धु अपार प्रजाजन मोद समइहैं ॥३६॥
नृपति जितेन्द्रिय सदा सत्य संकल्प महाना।
जागे सुमिरत इष्ट देव पद कंज सुजाना ॥३७॥
करत स्वप्न की सुरति हृदय में आनँद छायो।
पूर्व राग जिय जगेउ ध्यान रघुवर को आयो ॥३८॥
डूबे परमानन्द हृदय रस निधि उमगायो।
रोम रोम खिलि गयो प्रेम वश तन पुल कायो ॥३९॥
कछु क्षण भय स्तब्ध बहुरि उर धीरज धरि के।
तन कृत करि प्रभु ध्याय मोद मन मानस भरि के ॥४०॥

समय पाय सन्देश सकल भू मधि बिस्तारो ।
जो तोरै शिव धनुष होय जामात हमारो ॥४१॥
मम कन्या तेहि बरै भूमिजा कीर्ति स्वरूपा ।
सरल सुशील निधान अमल अनवद्य अनूपा ॥४२॥
सुनि शुभ सुचि सन्देश अस्व गज चढ़ि बहुराजा ।
आये दल बल सहित साजि निज बिबिध समाजा ॥४३॥
श्री विदेह महाराज कुँवरि की प्राप्ति करन हित ।
सिय की इच्छा बिबश सकल आये प्रमुदित चित ॥४४॥
सिय के परिकर सखी बालिका बनि इनके घर ।
प्रगटीं लीला करन हेतु अनुपम सुठि तन धर ॥४५॥
तिनहिं ग्रहण अब करन चहहिं मिथिलेश दुलारी ।
याते जुरे महीप महा पौरुष बलधारी ॥४६॥
चहुँ दिशि ते अवनीश सकल आये हर्षाई ।
दिव्य रूप गुण शील सिया को सुनि सुखपाई ॥४७॥
निज भुजबल दल जीति बरौं अस हृदय बिचारी ।
आये मिथिला माहिं भूप सब साज सँवारी ॥४८॥
श्री विदेह योगीश यथोचित स्वागत कीना ।
दीनो सुखद निवास सबहिं सब विधि सुख दीना ॥४९॥
रंग भूमि मधि सकल नृपन मिथिलेश बुलाई ।
निज प्रण दियो सुनाय वीर जो चाप उठाई ॥५०॥
तौरै हिय हर्षाय लली तेहि के गल माहीं ।
पहिरावै जयमाल बरै संसय कछु नाहीं ॥५१॥

सुनि विदेह प्रण प्रवल उठे सब नृपति सिहाई ।
पहुँचे धनुष समीप दियो बल सकल लगाई ॥५२॥
जब न उठेउ शिव चाप सकल अभिमान गमाई ।
बैठे निज शिरनाय हृदय में अति सकुचाई ॥५३॥
कान्ति हीन बल हीन भये सब राज समाजा ।
तदपि करन उत्पात चहत हिय लगति न लाजा ॥५४॥
सब नृप मिलि करि क्रोध जनक पर कीन चढ़ाई ।
भयो युद्ध घनघोर कौन कबि वरणि सुनाई ॥५५॥
कीनी विनय विदेह सुनत शिव सुखद सुजाना ।
निज गण दिये पठाय जाहु मिथिला बलवाना ॥५६॥
बनि सैनिक तुम सकल आपनो रूप छिपाई ।
मिलि विदेह दल संग देहु सब नृपन भगाई ॥५७॥
ते प्रभु पद शियनाय मिले मिथिलेश समाजा ।
लहि प्रसाद शिय केर भगाये पल में राजा ॥५८॥
सकल पराजित नृपति क्रोध युत निज गृह आये ।
जितिहैं बहुरि विदेह काहिं अस चाह बढ़ाये ॥५९॥
अखिल जगत वन्दिता विश्व जननी सर्वेश्वरि ।
क्षमा दया मय मूर्ति भाव भूषित रसिकेश्वरि ॥६०॥
तिनकी इच्छा पाय बिमुख नृप पूज्य न मानत ।
करत अनेक उपाधि सियहिं प्राकृत इव जानत ॥६१॥
तेहि कारण तिन केर भई क्षति अमित प्रकारा ।
मरे स्वयं जग बाजि नष्ट धन धान्य अपारा ॥६२॥

भइ अशान्ति मन माहिं छोभ अति हृदय मझारी ।
कदा न पावत शान्ति लिये ऋषि निकरहँकारी ॥६३॥
बूझेउ निज दुख हेतु मिटै किमि कहिय बिचारी ।
त्रिकालज्ञ ऋषि बृन्द बदत वर बचन सुखारी ॥६४॥
यह अनर्थ बलवान नृपन की छय हित आयो ।
तुम सबको ही दोष पाप बहु भाँति कमायो ॥६५॥
भूमि सुता जनकजा जगत जननी सुख दानी ।
तुम्हरी सुता समान जगत पूज्या गुण खानी ॥६६॥
काम बासना युक्त भाव दूषित तुम कीनो ।
पूज्य भावना तजी सुफल वाही को लीनो ॥६७॥
तेहि ते लहेउ अशान्ति छोभ सबके मन माहीं ।
भईं मैथिली बिमुख हेतु दूसर कछु नाहीं ॥६८॥
जाकी कृपा कटाक्ष विश्वसब मंगल रूपा ।
पावत परमानन्द सकल सब भाँति अनूपा ॥६९॥
योग क्षेम सुख शान्ति कदा उनकी जग नाहीं ।
जिनको मन मैथिली चरण नहिं ध्यावत आहीं ॥७०॥
यक्षराज एकबार कीन व्रत अति उमगाई ।
भये प्रसन्न महेश दियो दर्शन हर्षाई ॥७१॥
वाम भाग मधि लसहिं सुभग तन गिरिवर कन्या ।
सेवहिं नित शिव चरण हृदय भरि भाव अनन्या ॥७२॥
आश्चर्य मम रूप यक्षपति लखि ललचाई ।
देखन लगे कुदृष्टि वाम दृग चपल बनाई ॥७३॥

दृग में तुरत बिकार भयो यहि ते गज सारो।
लागेउ कहन कुबेर न तुम मन नेक बिचारो ॥७४॥
ब्रह्मा बिष्णु महेश शेष वन्दित छबि खानी।
परमह्लाद स्वरूप जगत सेव्या सुखदानी ॥७५॥
पराशक्ति रसरूप सु पतिव्रत पालन हारी।
अवनि सुता जनकजा मैथिली रूप उजारी ॥७६॥
जाकी कृपा कटाक्ष सु पति व्रत पूरन होई।
पतीव्रतन शिर मौर भूमि तनया सिय सोई ॥७७॥
परतर परम परेश ब्रह्म रस निधि रघुनन्दन।
तिनकी अति प्रियशक्ति करति उन को मन रन्जन ॥७८॥
अयोनिजा जानकी सकल जग सिरजन हारी।
उन में कियो कुभाव भूल अति भई तुम्हारी ॥७९॥
यदपि अमित अवतार तदपि सिय पति रघुराई।
होत सदा सब काल भूलि मन अनत न जाई ॥८०॥
तिमि प्रभु के अवतार होत जब जब जग माहीं।
तब तब श्री मैथिली सुतिय बनि संग सरसाहीं ॥८१॥
अपर प्रिया नहिं लसहि सर्वदा सिय प्रिय वामा।
सीयराम संयोग नित्य अविचल अभिरामा ॥८२॥
जो दुर्मति सिय माहिं करै गो अनुचित भावा।
तेहि की कुशल न होय सकल श्रुति शास्त्र बतावा ॥८३॥
सर्वेश्वर रघुवीर बिमुख चाहे जहँ जावै।
सपने शान्ति न लहे सतत नाना दुख पावै ॥८४॥

सो तुम भली प्रकार सिया पितु सँग रण ठाना ।
रुष्ट भईं मैथिली लहे तुम सब दुख नाना ॥८५॥
अब चाहो सुख शान्ति यतन मैं देहुँ बताई ।
निज कन्या लै साथ सकल नृप तिरहुति जाई ॥८६॥
कीजै सियसन विनय क्षमा अपराध कराई ।
निज कन्या सिय सखी हेत दीजै हर्षाई ॥८७॥
तुम सबकी बालिका प्रथमहू सिय सँग माहीं ।
सखी भाव सम्पन्न रहीं पद सेवत आहीं ॥८८॥
इनको यही बिधान होय गो सत्य बचन मम ।
ऐसो को अन्यथा करै जग को रघुवर सम ॥८९॥
ये अवश्य सिय सखी होयं मम बचन प्रमाना ।
इन के जन्म सु कर्म सकल देखेउ मैं ध्याना ॥९०॥
श्री साकेत मझार एक कन्यावन पावन ।
तहँ अखण्ड तप कियो पूर्व तब सुतनि सुहावनि ॥९१॥
प्रथम जन्म करि सुतप यही वर इनने मागा ।
भूतल में श्रीराम चरण पंकज अनुरागा ॥९२॥
रूप शील सौन्दर्य सिन्धु मन हरन सुछबिधर ।
अखिल लोक अभिराम काम पूरक सनेह घर ॥९३॥
भाग्यवान गुणवान एक अनवद्य अकामा ।
होवैं सुपति हमार सीय वल्लभ श्रीराम ॥९४॥
श्री रघुवर तजि आन सुपति मैं कदा न चाहौं ।
सीता पति पदपद्म सुदृढ़ शुचि नेह निबाहौं ॥९५॥

ऐसी पावन प्रीति रामपद पकज माहीं ।
दृढ़करि इनने गही भूलि मन अनत न जाहीं ॥९६॥
इन सबको लखि सुतप भाव मन को पहिचानी ।
अति प्रसन्न मन गये निकट शिव अनढर दानी ॥९७॥
कहे उलेंहु वरमागि बहुत वर इनहिं दिखाये ।
पर इन सबके हृदय माँहि एकौं न सुहाए ॥९८॥
किये न अंगीकार यही वर पुनि पुनि मागा ।
श्री भूमिजा समेत रामपद दृढ़ अनुरागा ॥९९॥
चक्रवर्ति नृपतनय रूप गुण शील उजारे ।
होवैं जीवन प्राणनाथ प्रिय सुपति हमारे ॥१००॥

दो०–सिय को दियो प्रसाद हम, पार्वहि गुनि बड़ भाग ।
सेवहिं सीताशरण पद, नित नव नव अनुराग ॥ २ ॥

श्री मैथिली कटाक्ष कृपा निशि दिन हम चाहैं ।
चरणाश्रित हो रहहिं सतत सुचि नेह निंवाहैं ॥ १ ॥
याते शम्भु प्रसाद भईं ये सुता तुमारी ।
निज रुचि प्रगटीं आय सकल गुणशील उजारी ॥ २ ॥
होवैं हम नृप सुता यहू वर इनने मागा ।
सुपति मिलहिं श्रीराम दियो शिव लखि अनुरागा ॥ ३ ॥
यद्यपि ये सब सुता जाइहैं रघुवर पासा ।
होइहैं उनकी प्रिया पाइहैं परम हुलासा ॥ ४ ॥
ऐसो कौन समर्थ शम्भु को बचन मिटावै ।
विमुख भये शिव सुखद कहहु कोउ किमि सुख पावै ॥ ५ ॥

धीर वीर गम्भीर राम भक्तन हितकारी ।
प्रगटे रघुकुल माहिं करत क्रीड़ा मन हारी ॥ ६ ॥
जब बीते कछुकाल शीघ्र प्रभु मिथिला अइहैं ।
भंजि शम्भु को चाप ब्याहि सिय को लै जइहैं ॥ ७ ॥
सुता संग्रहण करन हेत ही शम्भु सुजाना ।
दै निदेश मिथिलेश काहिं शिव सुखद बखाना ॥ ८ ॥
करहु आप धनु याग जुटा बहु राज समाजा ।
सीय स्वयंबर करन हेत साजहु सब साजा ॥ ९ ॥
भूमि सुता अनुरूप सुवर बिन किये प्रयासा ।
स्वयं आय के मिलहिं नृपति जनि होउ उदासा ॥१०॥
सुनि विदेह प्रण कियो वीर जो धनुष उठावै ।
तोरि करै दो खण्ड वरै सिय जग जस पावै ॥११॥
पूर्व सुधन्वा नाम एक भूपति बलवाना ।
सुनि भूमिजा स्वरूप शील महिमा गुण गाना ॥१२॥
आयो सिय की चाह हेत मिथिला सुखपाई ।
किय विदेह से युद्ध मरेउ निज मोह बढ़ाई ॥१३॥
सन्तत शिव भगवान करत मिथिलेश सहाई ।
तब को अस बलवान जाय तहँ ते यश पाई ॥१४॥
परमानन्द परेश ब्रह्म सर्वेश ज्ञान घन ।
राम सच्चिदानन्द कन्द परतत्त्व सुभग तन ॥१५॥
अज अनीह अनवद्य अमल अनुपम अघनाशक ।
अमित अनन्त अनादि अगोचर विश्व प्रकाशक ॥१६॥

अखिल लोक अभिराम साध्य तम साध्य सुजाना ।
शिव बिधि विष्णु सनेह सहित पूजत करि ध्याना ॥१७॥
जाको किंचित ध्यान कदा त्रयदेवहु पावैं ।
सोइ सिय के पति नित्य राज रघुवीर कहावैं ॥१८॥
जेहि ध्यावत त्रयदेव देव दानव मुनि बृन्दा ।
मानव की का बात भजहु रघुवर सुख कन्दा ॥१९॥
केवल लोक हितार्थ सिया श्री जनक दुलारी ।
निज इच्छा अवतरीं सतत आश्रित सुख कारी ॥२०॥
आगम निगम पुराण तत्ववेत्ता यह जानत ।
अन्यजीव भवजाल ग्रसित प्राकृत इव मानत ॥२१॥
जेहि पर इनकी कृपा होय सोइ शील स्वभावा ।
जानै महिमा सुगुण मनोहर कछुक प्रभावा ॥२२॥
इमि सुचि सरल सनेह भरे बोले जब मुनिवर ।
सुनि सब नृप हर्षाय गये मिथिला प्रमोद भर ॥२३॥
कियो महाँ अपराध क्षमा करवावन हेता ।
आये श्री मिथिलेश निकट सब नृपति सचेता ॥२४।
जोरी सभा महान तहाँ सिय को बुलवाई ।
वन्दे चरण सनेह सहित बहु विनय सुनाई ॥२५॥
पुनि उत्तम निज सुता सहित धन धान्य अपारा ।
सिय को अर्पण कीन महीपन विविध प्रकारा ॥२६॥
बहुरि सकल महिपाल जनक को सुयश बखानत ।
श्री विदेह पति सकल लोक के अस जिय जानत ॥२७॥

यहि विधि सकल नरेश आपने सदन सिधारे।
गावत सिय गुण गान भरे मन मोद अपारे ॥२८॥
तब नृप सुता सनेह सनी सब सिय पद पंकज।
वन्दत सहित सनेह जिनहिं पूजत शंकर अज ॥२९॥
पुनि सब निजकर जोरि कहन लागीं मृदुबानी।
हे शोभने सुशील सरल मृदु सरस सयानी।३०॥
देवसुते भूसुते जनकनन्दिनी कृपामयि।
क्षमासिन्धु सौन्दर्य सदन रसनिधि करुणामयि ॥३१॥
हे मैथिली उदार हृदय हे जनक दुलारी।
मातु सुनयना मोददानि गुण रूप उजारी ॥३२॥
हे आश्रित जन सुखद मोद मन्दिर जग पावनि।
हे आरति अघ हरनि स्वजन मन रस सरसावनि ॥३३॥
हम सब वाला वृन्द बसहिं पद पंकज पासा।
सेवहिं सहित सनेह सतत हिय लहहिं हुलासा ॥३४॥
दासी बनि सर्वदा सकल रुचि रखैं तिहारी।
निज गुनि पोषण करहिं आप ईश्वरी हमारी ॥३५॥
आप समर्थ उदार भरण पोषण में मेरे।
करि सु कृपा राखिये हमनि पद पंकज नेरे ॥३६॥
हम सब की गति एक आप ही जगत मझारी।
कीजै सार सँभार कृपामयि मृदुचित वारी ॥३७॥
अखिल विश्व अधार यथा भू सबहिं सुखद अति।
तैसेहिं आप उदार बदत श्रुति शास्त्र बिमल मति ॥३८॥

इमि वर बचन बिशेष विनय युत राजकुमारी ।
बोलहिं सहित सनेह सुनत सिय परम सुखारी ॥३६॥
अति कोमल मन भाव भरीं बोलीं मृदु बानी ।
परम प्रेम वात्सल्य सनी सुचि सुठि सुखदानी ॥४०॥
सम्बोधन करि गोत्र सबहिं निज निकट बुलाई ।
कर गहि कण्ठ लगाय बिहँसि बोलीं समुझाई ॥४१॥
लघु भगिनी सम सुखद सकल तुम राजकुमारी ।
मेरी प्राण अधार होउ मम प्राण पियारी ॥४२॥
तुम सब मेरी सखी सतत मोकहँ सुखदाई ।
तव सुअंक धरि शीश सोइहौं मैं हर्षाई ॥४३॥
निज सर्बस छरभार सौंपि तुमरे कर माहीं ।
पावौं मोद विनोद परम सुख हिय सरसाहीं ॥४४॥
इमि कहि बचन सनेह सहित मिथिलेश कुमारी ।
श्री सहजादिक सखी सकल सिय की अति प्यारी ॥४५॥
सिय पद पंकज प्रेम अमल अनवद्य सरस तर ।
जन्म सिद्ध संकोच रहित स्वाभाबिक मुद भर ॥४६॥
तिनकी साची देय चरण अपने छुआई ।
दियो सबहिं विश्वास हृदय में मोद बढ़ाई ॥४७॥
हो तुम सब मम सखी साची चरण हमारे ।
अब अति निर्भय रहौ इनहिं के सदा सहारे ॥४८॥
निकट वर्तिनी सखी कहहिं सिय सों कर जोरी ।
सुनिये विनय हमारि कृपा मयि राज किशोरी ॥४९॥

राजकुमारिन सकल आप निज सखी बनाई।
मम सन्मुख पद कंज राखि साची हर्षाई ॥५०॥
पुनि सोइ सखी प्रवीन कुमारिन सों हँसि बोली।
पगी परम अनुराग मधुर बानी रस घोली ॥५१॥
ऐ नृप बाला बृन्द सीय स्वामिनी तुम्हारी।
सतत यही दृढ़ भाव राख सिय रुख अनुहारी ॥५२॥
सेवहु नित पद कंज कपट छल दोष बिहाई।
परै न यामे भेद शाची हमहिं बनाई ॥५३॥
रंचक होत जो भेद लखैंगी हम दोउ माहीं।
करिहैं उचित सु न्याय कदा हम सकुचैं नाहीं ॥५४॥
सकल कुमारिन संग सतत बिलसैं सिय स्वामिनि।
सखी भाव सम्पन्न प्रेम पूरित दुति दामिनि ॥५५॥
प्रथम सहचरी बृन्द अपर दल राज कुमारी।
पगे परस्पर प्रेम रंग सेवहिं सिय प्यारी ॥५६॥
पावहिं परम प्रमोद प्रीति परतीति समेता।
सेवहिं श्री मैथिली चरण निशियाम सचेता ॥५७॥
क्षमा दया मयि मूर्ति सरल शुचि भाव समानी।
जीव मात्र हित निरत शील गुण निधि सुख खानी ॥५८॥
दोष न आवत दृष्टि होय किन अधम अयानी।
सब पर अति वात्सल्य कृपामयि रति रस दानी ॥५९॥
सेवहिं सखि पद कंज हृदय भरि भाव सुखारी।
पुनि सिय के चित चढ़ी प्रथम ज्यौं चिन्ता भारी ॥६०॥

आत्म समर्पण कीन पिया पद पंकज माहीं ।
राम रूप रमि गयो चित्त कहुँ जावत नाहीं ॥६१॥
परमह्लादिनि शक्ति दिव्य गुण परम प्रवीना ।
श्री विदेहनन्दिनी हृदय भरि नेह नवीना ॥६२॥
चिन्तन निशिदिन करहिं अहो कब प्राण अधारे ।
मिलिहैं पिय चितचोर रसिक लम्पट मनहारे ॥६३॥
कान्त कान्ति कमनीय कला कल कुशल काम हर ।
कामिनि काम कलोल केलि कौतुक प्रद छबिधर ॥६४॥
नव नेही नागरी नवल नायक नवीन वय ।
ललन ललित लावण्य श्याम सुन्दर सुजान नय ॥६५॥
चतुर चपल चितचोर चितय चितवनि अनियारी ।
कब लखिहौं भरि नयन सरस झाँकी मनहारी ॥६६॥
अति उत्काण्ठा जानि एक बृद्धा ढिग आई ।
पूजहु श्री गिरिसुता प्रेम युत हिय उमगाई ॥६७॥
बूझी विधि तेहि कही तुरत सब साज सजाई ।
गौरी पूजन कीन भली विधि हिय हर्षाई ॥६८॥
सुमन सुमन अनुराग भरे अनुराग चढ़ाई ।
पूजन विधि अति विज्ञ जनकजा अति सुख पाई ॥६९॥
विधिवत पूजन निरखि परखि अनुराग सुहावन ।
गौरी परम प्रसन्न बचन बोलीं मन भावन ॥७०॥
हे सीते भू सुते रूप गुण शील उजारी ।
चिन्ता चित जनि करहु सतत तुम रामपियारी ॥७१॥

तव हित श्री अवधेश ललन आवत अतुराई ।
करिहैं श्रम सब सकल मनोरथ सकल पुजाई ॥७२॥
होहिं भाव सब सिद्ध करहु निश्चय मन माहीं ।
अब जनि मानव खेद बचन मम मानि सदाहीं ॥७३॥
परम उपास्या आप अमित महिमा जग छाई ।
पूजत पद त्रयदेव देव दानव समुदाई ॥७४॥
नर मुनि निकर सनेह सहित ध्यावत पद पावन ।
तुमरिहि कृपा कटाक्ष लोक सब लगत सुहावन ॥७५॥
सुकृती जनम अनेक केर जिनको सुचि भावा ।
सेवत चरण सरोज लखत तव अमित प्रभावा ॥७६॥
श्री गौरी गम्भीर गिरा सुनि सिय सकुचानी ।
प्रमुदित सखिन समेत हृदय में अति हर्षानी ॥७७॥
द्विजवर निकर बुलाय पूजि सममानि सिहाई ।
दीन बिविधि बरदान सकल ब्राह्मण सुखपाई ॥७८॥
दियो सु आर्शिवाद सदा चिरजियो दुलारी ।
पावौ परमानन्द सतत आश्रित हितकारी ॥७९॥
पुनि द्विज पतिनिन काहिं मधुर भोजन करवाई ।
सब सों पाय अशीश हृदय में अति सुखपाई ॥८०॥
कदा देव ऋषि अपर मुनिन मुख सों अति पावन ।
सुनि रघुवर कमनीय केलि अति सरस सुहावन ॥८१॥
रास बिहार बिनोद बिपुल विद्या प्रवीण तर ।
नृत्य गान संगीत कला पूरण सुषमा कर ॥८२॥

संग सुभग सहचरी अमित गुण रूप उजागरि।
सकल कला कल कुशल कामिनी सब नव नागरि ॥८३॥
पुनि गुरु वर की कृपा अखिल विद्या प्रभु पाई।
सर्व कला सम्पन्न अवध नृप सुत रघुराई ॥८४॥
यह शुभ सरस सँदेश सुनत मन में हर्षाई।
अयोनिजा मैथिली सखी गन निकट बुलाई ॥८५॥
सब को आज्ञा दई सिखहु संगीत सुहावन।
बुलवाये संगीत कला शिक्षक प्रिय पावन ॥८६॥
यद्यपि सब सहचरी दिव्य गुण शील उजारी।
सकल कला सम्पन्न मधुर मनहर सुकुमारी ॥८७॥
तद्यपि बाल चरित्र करत जनु प्राकृत बाला।
सिखत नृत्य संगीत कला सुठि सुखद रसाला ॥८८॥
जैसे श्री अवनिज स्वजन सुख हित सब लीला।
करहिं चरित मन हरन सरस सज्जन सुखशीला ॥८९॥
तैसेहिं ये सब सखी अलौकिक अकथ अनूपा।
आश्रित सुखद सनेह बिबस प्राकृत अनुरूपा ॥९०॥
अल्प समय में सकल सखी संगीत परायन।
भईं नवल नागरी नेह नमि अति चित चायन ॥९१॥
यह लखि श्री मैथिली आपने हृदय बिचारी।
करन सखिन संगीत परीक्षा जनक दुलारी ॥९२॥
सब कला गुण रूप शील विद्या सु मूर्ति वर।
अमित सुरति मद दमन प्रेम सुख सदन कान्तिकर ॥९३॥

श्री भूमिजा सनेह सहित एकान्त बुलाई ।
सकल सखिन सँग करत रास लीला सुखदाई ॥६४॥
यद्यपि रास विलास माहिं सुख स्वाद अपारा ।
सकल सखिन कहँ देहिं लेहिं निज रुचि अनुसारा ॥६५॥
श्री अवधेश कुमार मिलन की चाह तदपि उर ।
निशि दिन "सीतशरण" चैन नहिं प्रबल विरह सर ॥६६॥
बेधति हृदय सनेह श्रोत प्रगटत अति पावन ।
यद्यपि रूप अनूप अमल अद्भुत मन भावन ॥६७॥
जो शुभ गुण अरु कला सिखहिं मिथिलेश दुलारी ।
चित में जायँ समाय न निज महिमा बिस्तारी ॥६८॥
जैसे जलधि मझार मेघ जल जाय समाई ।
बढ़ै घटै नहिं कदा एक रस रहत सदाई ॥६९॥
तिमि मिथिलाधिप लली अखिल गुण कला निधाना ।
कदा कला गुण घटैं बढ़ैं नहिं एक समाना ॥१००॥

दो०-सब विद्या शुभ गुण कला, सिय कर कृपा विलास ।
याते विनहि प्रयास सब, आवत जानकि पास ॥३॥

जो विद्या दुस्प्राप्य कदा कोइ जीव न पावै ।
"सीताशरण" प्रयास बिना सो सिय पहँ आवै ॥ १ ॥
सर्व कला विद्यादि जात सिय पहँ अतुराई ।
सुनि जनि संसय होय न यह अचरज अधिकाई ॥ २ ॥
अकथ अमल अनवद्य अनाश्चर्या अति पावन ।
अयोनिजा मैथिली अवनि तनया मन भावन ॥ ३ ॥

रूप अनूप अपार प्रेम रस मूर्ति मधुर तर।
भूतल में सब तिनय मध्य बिलसत विशेष वर ॥ ४॥
असं कीर्ण ऐश्वर्य सकल सुख खानि कृपामयि।
धरा सुता अति धन्य क्षमा निधि अतिकरुणामयि ॥ ५ ॥
यद्यपि अति माधुर्य मगन ऐश्वर्य छिपाई।
क्रीड़त प्राकृत सदृश निकट अति रहत सदाई ॥ ६ ॥
जिमि करगत आँवला भाँति तेहि अमित प्रभावा।
साथ कदा नहिं तजत यदपि बहु कियो दुरावा ॥ ७ ॥
प्रीतम प्राण अधार परम परिचर्या काजा।
"सीताशरण" विदेह लली साजे सब साजा ॥ ८ ॥
सरस मधुर संगीत करैं सम्पूर्ण सुखारी।
यदपि स्वतः सब कला कुशल मिथिलेश दुलारी ॥ ९ ॥
सकल सखी समुदाय सीय सन विनय कीन वर।
हे सीते क्रीड़ा कलोल रत परम प्रेम घर ॥१०॥
अमल अनादि अनूप रूप रसिकेश सुछबि धर।
चक्रवर्ति नृप तनय मधुर मनहरन नेह घर ॥११॥
सुख सुषमा आगार सार सर्वज्ञ ज्ञान घन।
शील सनेह निधान प्रेम रस दान सरस मन ॥१२॥
सुठि सुकुमार उदार सरल नित तव हृदयेश्वर।
स्थित हृदय निकुंज मध्य तुम्हरे रसिकेश्वर ॥१३॥
मेरी यह बर विनय मानि हे प्राण अधारी।
निज सुख हित हम सबनि हेत सुनिये सुकुमारी ॥१४॥

धरि निज पिय को रूप नवल श्रृंगार सजाई ।
दीजै परमानन्द सरस झाँकी दिखलाई ॥१५॥
सुनि सखियन की विनय बिहँसि मिथिलेश दुलारी ।
त्तण में धरि पिय रूप ललित श्रृंगार सँवारी ॥१६॥
करि कटात्त कमनीय कान्त को भाव दिखाई ।
मन्द मन्द हँसि हेरि सखिन मन लीन चुराई ॥१७॥
यद्यपि कृत्रिम रूप तदपि मन हरन रसाला ।
लखि वालागन बिपुल हृदय में भईं निहाला ॥१८॥
श्री मैथिली मनोज मान मर्दन रघुवर छबि ।
धारण कीनी वरणि कहै अस कवन सुमति कबि ॥१९॥
शिर पर ललित रसाल पाग शोभित सुषमाकर ।
मुक्त्त कलँगी कलित परम अद्भुत अति मनहर ॥२०॥
मनहर अलकावली धनुष अति ललित कलित वर ।
मंजुल बाण उदार भाव भूषित प्रतिभा कर ॥२१॥
बैठनि मिलनि सुचलनि हँसनि बोलनि मन भावनि ।
तिबवनि चंचल चखन चितय चित चोरनि पावनि ॥२२॥
करि कमनीय कटात्त बिबिधि वर हाव भाव गति ।
सकल सखिन उर बशी फसी छबि में सबकी मति ॥२३॥
निज सम दम करि परम धैर्य मन अचल बनाई ।
कोउ सुन्दर सुठि पुरुष न मन को सकै चलाई ॥२४॥
तिनको धैर्य सु वृत्त मूल से दीन बहाई ।
सकल सखी तजि धीर भईं वल नेह वढ़ाई ॥२५॥

निज निपुणता दिखाय बिधाता की कुशलाई ।
दीनी व्यर्थ बनाय परम प्रतिभा प्रगटाई ॥२६॥
निज प्रीतम बपु बिरचि सखिन चित लीन चुराई ।
नाहिन कछु आश्चर्य न कछु महिमा अधिकाई ॥२७॥
अवनि सुता निज रूप माहिं सब बालन मोहैं ।
करिके कृपा कटाक्ष मन्द हँसि जेहि दिशि जोहैं ॥२८॥
फिर पिय को सुठि रूप मधुर मनहरन सरसतर ।
तेहि धरि सखि चित हरेउ कौन संसय बिशेष वर ॥२९॥
श्रीं विदेह योगीश वंश उद्भव सुख रूपा ।
श्री मैथिली उदार अमल अनवद्य अनूपा ॥३०॥
श्री विदेह वर वंश जलधि सम सिय जनु कमला ।
निज रुचि प्रगटीं आय दिव्य तनु धरि सुचि नवला ॥३१॥
पूजत नित पद कंज उमा रति रमा भवानी ।
निज निज प्रीतम संग सदा उर में सुख मानी ॥३२॥
जे अति धन्या सुतिय जगत में सती कहावैं ।
सो सब तव पद पद्म प्रेम भरि हिय में ध्यावैं ॥३३॥
कोई सखि अस कहैं कबहुँ सिय रुचि अनुसारी ।
पायेगी वर रुचिर होयँगी हृदय सुखारी ॥३४॥
पर हम सब यहि रूप निरखि अतिसय अनुरागत ।
नयनन को फल पाय हृदय रस रंग रँगावत ॥३५॥
इमि सब सखी सनेह सनी मन करत बिचारा ।
बोलहिं अटपट बैन नागरी बिबिधि प्रकारा ॥३६॥

प्रेमाबेश विशेष सकल नायिका नवेली ।
बदहिं बिमल विधु बदन बचन वर सरस सहेली ॥३७॥
ये सुठि राजकुमार मारमद मर्दक मनहर ।
ममसिय स्वामिनि योग्य परम अनुपम सुन्दर वर ॥३८॥
अस निज हृदय विचारि परम लज्जित सो बाला ।
नायक भाव बढ़ाय निकट गमनी छबि जाला ॥३९॥
धरणिसुता प्राणेश राम रघुवीर उदारा ।
तिन पद रति सब केर चहहिं उन कर अति प्यारा ॥४०॥
राम रूप मैथिली काहिं कोइ सखी सयानी ।
भरि सु प्रेम परिक्रमा कीम उर में सुख मानी ॥४१॥
मन्मथ बेग विशेष कामिनी रति रस पागी ।
जाय लाड़िली निकट भाव भरि चरणन लागी ॥४२॥
जिमि नायिका नवीन नाह सों अति सकुचाई ।
पावन चाहय प्यार परम हँसि हाव जनाई ॥४३॥
काम मोहिता बोलि बिमल बिबेक बिसराई ।
सियजू को पिय मानि चहै रति रमण सुहाई ॥४४॥
विहबल सखी समाज दशा कोंधि कौन बतावै ।
"सीताशरण" सनेह मगन कोइ पार न पावै ॥४५॥
नृत्यहिं नेह निमग्न नवल नायिका प्यार भरि ।
पावहिं परमानन्द हृदय में मधुर मूर्ति धरि ॥४६॥
छूटि हाथ से गिरत भूमि करताल मजीरा ।
टूटति सखिन सुमाल स्वर्ण मण्डित मणिहीरा ॥४७॥

उमगित हृदय अनंग असंगत गीत सु गावैं।
गति स्वर ताल अबद्ध बाजने बिपुल बजावैं ॥४८॥
कोइ सखि नृत्य प्रवीण जासु उपमा कोउ नाहीं।
पिय बपु धारी सीय नृत्य लखि सोउ मन माहीं ॥४६॥
पाय परम संकोच भूलि गति गर्ब गमाई।
बाह्य वृत्ति निवृत्ति देह की सुधि बिसराई ॥५०॥
अंग जग मोहन रूप राम अभिराम हृदय हर।
पूरक प्रेम प्रकाश पुंज प्रतिभा प्रमोद घर ॥५१॥
कृत्रिम श्री मैथिली बिरचि सब सखिन मझारी।
अद्भुत रास बिलाश सरस लीला बिस्तारी ॥५२॥
कोइ नृप कन्या अली भली बिधि करै बढ़ाई।
नृत्य कला कमनीय कुशलता अहह सुहाई ॥५३॥
सकल कला गुण खानि सीय सुख सदन सरस मन।
करत प्रशंसा थकत शेष शारदा चपल तन ॥५४॥
मुरनि ढुरनि पग धरनि नटनि मन हरन सुहावन।
हँसि हेरनि मृदु गान तान सखि उर रस छावन ॥५५॥
यदि कोइ शंका करै राज कन्या समुदाई।
निरखि सिया को रूप वृथा विह्वलता पाई ॥५६॥
समाधान अपि कीन सुनहु सज्जन सुखपाई।
यह सिय केर प्रभाव थकत जाके गुण गाई ॥५७॥
शारद शेष महेश रमापति बिधि गण राजा।
तिन रचि पिय को रूप बिमोहीं सखी समाजा ॥५८॥

घर से बाहर गईं कदा नहिं राज कुमारी ।
अन्य पुरुष किमि जाय महल मधि कहहु बिचारी ॥५९॥
तजि अपनो परिवार पुरुष इनने न निहारो ।
आज एक ही बार रूप अनुपम छबिबारो ॥६०॥
निरखि बिकीं बिन दाम राजकन्या समुदाई ।
पिय को रूप उदार अमल अनुछन अधिकाई ॥६१॥
बिरचेउ श्री मैथिली सकल सखियन सुखदीना ।
करि कटाक्ष कमनीय मन्द हँसि रस बश कीना ॥६२॥
सोचहु सीय प्रभाव कवन आश्चर्य लखाई ।
जो कछु करैं सो थोर अकथ महिमा श्रुति गाई ॥६३॥
इमि नायिका नवीन नेह नमि दशा भुलानी ।
पुनि उर धीरज धारि सकल सहचरी सयानी ॥६४॥
मन में करहिं बिचार अहैं हम सब नृप बाला ।
उत्तम कुल उद्भवा सकल गुण निधि छबि जाला ॥६५॥
एका एक यहि भाँति बिकलता उचित न होई ।
भल न कहे कोउ जगत माहिं सुनिहैं जो कोई ॥६६॥
अस निज हृदय बिचारि सकल नायिका नवीनी ।
धरि धीरज सकुचाय प्रेम पगि परम प्रवीनी ॥६७॥
पिय बपु धारी सीय काहिं आनन्द बढ़ावन ।
निज निज कला विचित्र सखी लागीं प्रगटाबन ॥६८॥
यहि बिधि लीला ललित कीन मिथिलेश दुलारी ।
निज आश्रित सहचरिन कियो सब भाँति सुखारी ॥६९॥

अखिल लोक अरु वेद बिदित जाको यश पावन ।
भूमि सुता मैथिली विरचि पिय बेश सुहावन ॥७०॥
शारदीय निशि मध्य आभरन बसन अनूपा ।
पहिरि सु अंगन माहिं सकल प्रीतम अनुरूपा ॥७१॥
शरद चाँदनी सहित निशा मधि सखिन समेता ।
कीन सरस रस रास दीन सुख स्वाद सचेता ॥७२॥
हँसि हँसि कण्ठ लगाय सखिन दृग दृगन मिलाई ।
पीवत अधर पियूष भुजन सों भुज लपटाई ॥७३॥
परसत अमल कपोल चूमि कर चिबुक लगाई ।
निरखत एक टक बदन नयन में नेह बढ़ाई ॥७४॥
नृत्यहिं भरि अनुराग सखिन कर पकरि सुखारी ।
सकल अलिन सँग रमत सीय प्रीतम बपु धारी ॥७५॥
मण्डल ललित बनाय कला कुशला प्रवीन तर ।
रमि रमाय सुख लेत देत भरि भाव सरस वर ॥७६॥
शशि मन कियो बिचार सिया रघुवर प्रिय वामा ।
रघुनन्दन मन रमन प्रेम रस निधि अभिरामा ॥७७॥
अस निज हृदय बिचारि सरस सुन्दर प्रकाश करि ।
परम प्रकाशित कियो रास मण्डप सनेह भरि ॥७८॥
सकल सखिन की पूज्य बुद्धि शशि में यह जानी ।
सब को कियो प्रणाम चन्द्रमा अति सुख मानी ॥७९॥
अलियनहू पिय अर्ध नाम गुनि कियो प्रणामा ।
नहिं वाकी छवि निरखि सखिन पायो अभिरामा ॥८०॥

इन सब को मन रमत सतत प्रीतम पद माहीं ।
अन्य पुरुष ढिग जाय कदा सपनेहुँ महँ नाहीं ॥८१॥
श्री मैथिली सु विज्ञ कला कुशला मन माहीं ।
कीनो बिमल बिचार पिता गृह सुखद सुहाहीं ॥८२॥
उचित कन्यकनि यहीं केलि कल कुशल बनाई ।
हास्य बिनोद बिशाल सबनि सब भाँति सिखाई ॥८३॥
अस अपने मन सोचि सकल सखियन दुलराई ।
हास्य बिलाश बिनोद मधुर रस रीति सिखाई ॥८४॥
भू देवी निज हृदय मध्य अस कीन बिचारा ।
मम कन्या संगीत नृत्य आशक्त अपारा ॥८५॥
पिय वियोग में विरह व्यथित जग के सुख त्यागी ।
देह दशा विसराय प्राण वल्लभ रति जागी ॥८६॥
ऐसी दशा निहारि स्वयं आईं सिय पासा ।
दीने भूषन बषन अमल सुठि सुभग प्रकाशा ॥८७॥
श्रक चन्दन अँग राग ललित अंजन मन भावन ।
सकल सौज शृंगार केर दीनी अति पावन ॥८८॥
श्री हर प्रिया सु निशा माहिं रच्छहिं सनेह भरि ।
सखिन सहित मैथिली रमहिं जहँ बहु बिनोद करि ॥८९॥
निशिचर शत्रु समाज उपद्रव कबहुँ न होई ।
रच्छत मिथिलाधिपति दास जानत सब कोई ॥९०॥
श्री मिथिलापुर निरखि कहैं हर्षित सुर वामा ।
अहो परम आश्चर्य आज भू लोक ललामा ॥९१॥

जो अपार सुख स्वाद रहेउ भरि सुरपुर माहीं ।
वाहू ते अति अधिक आज तिरहुत दर्शाहीं ॥९२॥
अपने आश्रित जनन आज मिथिलेश किशोरी ।
करि सु कृपा कमनीय कीन अतिसय रस बोरी ॥९३॥
जीत्यो सुख सब सुरन केर मैथिली अकेली ।
यद्यपि वयस नवीन राज कन्या अलबेली ॥९४॥
जब रघुनन्दन संग करेंगी विपुल बिहारा ।
तब वैकुण्ठ सु मोक्ष केर सुख स्वाद अपारा ॥९५॥
जीतेंगी यह अवसि न कछु संसय यहि माहीं ।
सुरांगना यहि भाँति बचन बोलत सकुचाहीं ॥९६॥
स्वर्ग निवासी देव पतत भू पर पुनि जावत ।
देव लोक में रहत गिरन से सतत डरावत ॥९७॥
पर भू लोक मंझार जनमि श्रीराम उदारा ।
लहत अभय सुख स्वाद अमल अनवद्य अपारा ॥९८॥
तेहि सुख को सत अंश कदा सुर निकर न पावैं ।
यद्यपि निबसत स्वर्ग नरन से पूज्य कहावैं ॥९९॥
यदपि नराधिप राम तदपि पद देव वाच्य वर ।
घटत एक रघुवीर माहिं नहिं आन काहु पर ॥१००॥

दो०--ऊँचे गिरि वर पर चढ़े, कहहु कवन सुख होय ।
यातें सीताशरण तजि, रामहि देव न कोय ॥९॥

अचल अमल अति अभय एक रस भोगत सब सुख ।
रोग शोग भय रहित कदा सपनेहुँ न होत दुख ॥ १ ॥

स्वर्ग निबासी देव अस्तु रूढ़ी पद अहही ।
केवल एक श्रीराम देव निगमागम कहही ॥ २ ॥
याते इन मैथिली केर सुख स्वाद समाना ।
जग मधि अन्य न होय कहूँ भोक्ता हम जाना ॥ ३ ॥
तुलना में नहिं अपर मैथिली सुख ओदन सम ।
औरन को सुख सालि सरिस याही से अति कम ॥ ४ ॥
अल्प काल में लहहिं जौन सुख जनक दुलारी ।
अन्य भोक्तन केर कोटि कल्पन से भारी ॥ ५ ॥
याते भोक्ता अपर मैथिली सम कोउ नाहीं ।
अहो परम आश्चर्य सीय अति लघु बय माहीं ॥ ६ ॥
अमित कला गुण राशि सकल विद्या किमि पाई ।
भाग्यवान कर भाग्य सदा ही होत सहाई ॥ ७ ॥
श्री मिथिलाधिप लली भाग्य को भाग्य प्रदायक ।
याते नहिं आश्चर्य कछू सिय जू सब लायक ॥ ८ ॥
बिघ्न रहित सुख स्वाद भाग्य सुकृती को देवत ।
याते पुण्यात्मा अचल अक्षय सुख लेवत ॥ ९ ॥
सुरांगना यहि भाँति कहत वर बचन सुखारी ।
निरखहिं पुरुष स्वरूप माहिं मिथिलेश दुलारी ॥१०॥
मोहित सब सुर बधू मदन व्यापेउ तन माहीं ।
गईं सकल सिय पास रंच लज्जा भय नाहीं ॥११॥
दृग भरि दर्शन पाय चरण बन्दे सुख पाई ।
पायो प्यार अपार गईं निज लोक सिहाई ॥१२॥

पर सिय को पिय रूप माधुरी उर उमगावत।
अति विह्वलता हित गईं निज पुर यश गावत ॥१३॥
जब सुरांगना गईं सकल निज लोक सिधारी।
शरद पूर्ण बिधु सरिस बदन मिथिलेश दुलारी ॥१४॥
निज छबि छटा छकाय सकल सखियन सँग माहीं।
क्रीड़ा केलि कलोल करत अतिमय हर्षाहीं ॥१५॥
वह मन मोहन रूप निरखि सब सखी समाजा।
तन मन की सुधि त्यागि भईं एक टक तजि लाजा ॥१६॥
रूप अनूप उदार सरस सौन्दर्य निहारी।
मोहित वाला बृन्द सकल निज तन मन वारी ॥१७॥
सबहीं को मन और नयन सिय छबि में लागे।
नायक बुद्धि बढ़ाय लखहिं अतिसय रस पागे ॥१८॥
यह ही मम प्राणेश यही गति एक हमारे।
अन्य न मोर उपाय यही मम दृगन सितारे ॥१९॥
तेहि च्रण श्री मैथिली किये पिय को शृंगारा।
नटवर वेश नवीन परम सुषमा आगारा ॥२०॥
कीनीं मुदित प्रणाम हर्षि तेहि दिशा निहारी।
जेहि दिशि निबसत प्राण नाथ रस रास बिहारी ॥२१॥
सखियन रहीं दिखाय आज शशि अधिक सुहावन।
देखहु सब नागरी लगत अति ही मन भावन ॥२२॥
बिधु निरखन के ब्याज सखिन को रहीं सिखाई।
जेहि दिशि प्रीतम बसैं वाहि वन्दै सुख पाई ॥२३॥

तेहि दिशि को सब वस्तु पूजनीया अति प्यारी ।
पर यह भेद ललाल रसिक बिरलेइ उर धारी ॥२४॥
प्रिय निरखहिं पिय ओर सखी जानहिं शशि कादीं ।
देखत भाव बढ़ाय सुछबि लखि हिय हर्षानीं ॥२५॥
पुनि पगि प्यार पुनीत पिया के गुण गण गावत ।
इच्छा रस बर्तिनी मैथिली अति सुख पावत ॥२६॥
मन रंजन मन रमन मदन मंद मर्दन हारे ।
रूप अनूप अपार सरस मम हृदन सितारे ॥२७॥
सुख सुषमा आगार मधुर मन मोहन छविधर ।
नृप किशोर चितचोर परम रस बोर नेह घर ॥२८॥
प्रीतम परम प्रवीण प्रणत प्रण पालन हारे ।
सरस सुभग सुकुमार प्राणधन रूप उजारे ॥२९॥
लखि सब सखी समाज मुदित प्रीतम गुण गावत ।
सुनहिं मैथिली मोद भरी अँग अँग पुलकावत ॥३०॥
मन बुधि चित एकाग्र किये प्रीतम गुण ग्रामा ।
सुनहिं सिया सुख पाय सखिन सों मन अभिरामा ॥३१॥
पावहिं परमानन्द प्रेम पूरित पिय के सिय ।
गावहिं गीत रसाल जाल छबिधर उदार हिय ॥३२॥
सो आनन्द अपार उमगि दश दिशा समानो ।
पूरि रह्यो तिहुँ लोक अखिल जीवन रस सानो ॥३३॥
सज्जन रसिक उदार समाधी भाव मझारी ।
ध्यावत आतम स्वरूप माहिं सुख लहत अपारी ॥३४॥

पावत परमानन्द देह की भान भुलाई।
रस सागर में मगन रहत सो रस उर लाई ॥३५॥
रघुवर प्रिया प्रवीण लाड़िली जनक किशोरी।
प्रीतम दिशा निहारि होइ अति प्रेम विभोरी ॥३६॥
भरि भरि अंजलि पुण्य मुदित फेंकति मुसुकाई।
मानो हिय भरि भाब पिया सों कहति बुझाई ॥३७॥
हे पिय परम प्रवीण प्राण प्रीतम मम प्यारे।
तलपत निज मम नयन अहो हृदयेश हमारे ॥३८॥
यह प्रिय पुण्य प्रतीति हेत मैं नाथ पठाई।
याते हे रसिकेश मिलहु अति द्रुत मोहिं आई ॥३९॥
पर यह अति गम्भीर भाव उर माहिं छिपायो।
क्रीड़न हित रस क्रिया ब्याज में सबहिं भ्रमायो ॥४०॥
जानहिं नीति अनीति भली बिधि अवनि कुमारी।
गूढ़ रहस्य छिपाय लेय श्रुति नीति पुकारी ॥४१॥
होय अनीति अपार रहस जो प्रगट जनावै।
जग में निन्दित होय कदा सुख शान्ति न पावै ॥४२॥
मक्खन ते अति सरस मृदुल चित जनक दुलारी।
पुनि पिय विरह वियोग अनल हिय जरत अपारी ॥४३॥
सिय ने हिय दृढ़ भाव भरी पुष्पाँचलि दीनी।
प्रीतम परम सुजान मनो प्रमुदित हँसि लीनी ॥४४॥
पुनि पिय के प्रिय अंग केर सौरभ ले पावन।
सेवा में श्री पवन देव आये पहुँचावन ॥४५॥

पिय के अँग के संग केर सौरभ लै पासा ।
आये मेरे पवन देव हिय भरे हुलासा ॥४६॥
पुनि सिय कीन बिचार पिता जिमि पुत्रि दुलारत ।
तिमि को कहँ श्री पवन देव भरि भाव निहारत ॥४७॥
तब सिय सखियन मध्य सुखावन स्वेद सु ब्याजा ।
अँग से बसन हटाय दिये परिहरि भय लाजा ॥४८॥
प्रीतम अँग सुगन्ध युक्त प्रिय पवन सुखारी ।
लागीं ग्रहण सु करन मुदित मन राज दुलारी ॥४९॥
बसन बिना तन लसत अमित विद्युति द्युति हारी ।
"सीताशरण" निहारि सु छबि सखियाँ बलिहारी ॥५०॥
भूषन बषन मझार अंग छबि रहत छिपाई ।
जिमि सरोज पल्लवन रहित जल सुभग लखाई ॥५१॥
पियतन सुभग सुगन्ध सहित प्रिय पवन परसि अँग ।
सुधि बुधि रहीं भुलाय पगीं प्रीतम सनेह रँग ॥५२॥
यह रहस्य कथनीय हृदय में लीन छिपाई ।
स्वेद सुखावन ब्याज देह से बसन हटाई ॥५३॥
यद्यपि परम प्रवीण सखी सब सुभग सयानी ।
तद्यपि सिय उर भाव सकीं नहिं कोउ पहिचानी ॥५४॥
इमि मृग सावक नयनि जगत ईश्वरी मधुर तर ।
नित नव क्रीड़ा करत भरत सुख स्वाद सखिन उर ॥५५॥
पिय की दिशि ते उड़त लखे आवत खग बृन्दा ।

पगि पिय के अनुराग प्रिया हिय भाव बढ़ाई ।
भोजन सबहिं पवाय प्रेम पूरित सुख पाई ॥५७॥
उत्कण्ठा हिय प्रबल चहहिं जानन यह बाता ।
पिय पठये मम पास इनहिं पिय मन चित राता ॥५८॥
भावावेश विशेष पिया प्रगटत हिय माहीं ।
लखि लखि श्री मैथिली मधुर मूरति मुसुकाहीं ॥५९॥
पिय छबि लखि प्रत्यच्छ चित्त में जनक दुलारी ।
पावहिं परमानन्द प्यार पगि हृदय मझारी ॥६०॥
पुलकत सब अँग अँग नयन बर्षत जल धारा ।
कम्पत तन स्वर भंग सात्विक जगे बिकारा ॥६१॥
सरस सरल सुकुमारि स्वबन मधि बिहरन हारी ।
श्री बिदेह नृप लली परम स्वच्छन्द सुखारी ॥६२॥
जनक महल के मध्य एक कन्या बन पावन ।
तामधि सीता बिपिन परम मन हरन सुहावन ॥६३ ।
तहँ निज सखियन साथ सदा मिथिलेश कुमारी ।
बिहरत अति सुखपाय करहिं क्रीड़ा मन हारी ॥६४॥
उर प्रगटत बहु भाव यतन करि देति छिपाई ।
बहु बिधि बात बनाय सखिन लेवति समुझाई ॥६५॥
रघुनन्दन गुण रूप शील सुषमा उर ध्याई ।
पावहिं परम प्रमोद पलक सम दिवस बिताई ॥६६॥
पिय गुण लीला ललित कदा उर में नहिं आवै ।
सो दिन कल्प समान लगत अतिसय दुख पावै ॥६७॥

भू देवी जग मातु तस्य पुत्री सनेह भरि।
बिहरे सखियन साथ देहिं सुख स्वाद केलि करि ॥६८॥
यद्यपि श्रुति मर्याद पिता जेहि सँग निज बाला।
बिधिवत देहि बिबाहि पुरुष सोइ रूप रसाला ॥६९॥
तजि तेहि को सो बाल अन्य से प्रेम न करई।
यदि मेटै मर्याद अवसि भव निधि में परई ॥७०॥
श्रुति आज्ञा यहि भाँति जगत में मानत प्रानी।
जो नहिं मानै मूढ़ कहावै अति अज्ञानी ॥७१॥
आगम निगम सुनीति मैथिली जानहिं नीके।
तदपि प्रेम परतन्त्र त्यागि संसय सब जीके ॥७२॥
मन बच क्रम सब भाँति स्वपति श्री रामहिं मानहिं।
सुनि गुणशील स्वभाव रूप निशिदिन करि ध्यानहिं ॥७३॥
यह सर्वत्र प्रसिद्ध नायकहिं केबल नायक।
समन करत सब शोक अखिल सुख स्वाद प्रदायक ॥७४॥
याते भाव अनन्य राखि निज पति में बामा।
तत्सुख सुखी प्रसन्न सदा पिय मन अभिरामा ॥७५॥
पति सुख से नहिं परे अपर सुख बनितन काहीं।
ब्रह्म तत्त्व से श्रेष्ठ तत्त्व जिमि दूसर नाहीं ॥७६॥
याते पति सर्वस्व सदा नायिका नवीनी।
निज सुख तजि सब भाँति पतिहिं सेवत रसभीनी ॥७७॥
असि निजि हृदय विचारि भाग्य भूमा सुख रूपा।

सरस सरलसुकुमार मान प्रद स्वयं अमानी।
श्री रघुवीर उदार सकल रस निधि गुण खानी ॥७९॥
श्री मैथिली पुनीत प्रेम पूरित प्रण कीना।
श्री रामहिं पति मानि अन्य में चिन्त न दीना ॥८०॥
निज पन पालन करैं विघ्न आवैं अधिकाई।
लघु कन्या तन यदपि तदपि त्रण सरिस हटाई ॥८१॥
अतिसय भावावेश सदा रघुवर को चाहैं।
पावहिं परमानन्द प्रेम पन निज निर्बाहैं ॥८२॥
सुकृत पुंज मैथिली सतत अति हर्ष भरी तन।
करि क्रीड़ा कमनीय निशा बितवति प्रमोद मन ॥८३॥
उर में मन चित चोर परम रसबोर रसिक वर।
बिहरत राजकिशोर राम रघुवीर सुछबिधर ॥८४॥
सखी सयानी सकल सीय संकेत सौंज सजि।
करहिं केलि कमनीय रास रस सब सँकोच तजि ॥८५॥
मन हर गीत ललाम सखी गावहिं मधुरे स्वर।
सुनहिं सीय सुख पाय नृत्य देखहिं उमंग भर ॥८६॥
जब सखि सहित सनेह सरस प्रीतम गुण गावहिं।
सुनि सिय उर अनुराग बढ़त अतिसय हर्षावहिं ॥८७॥
प्रेमावेश विशेष सियहिं अस परत दिखाई।
सन्मुख रसिक नरेश प्राण वल्लभ रघुराई ॥८८॥
यह ही जीबन प्राणनाथ अस हृदय बिचारी।
सखियन निकट बुलाय मुदित मन जनक दुलारी ॥८९॥

भूषन बसन अनूप रतन माला न्यौछाई ।
देत सखिन सुख सहित सिया अतिमृदु मुसुकाई ॥९०॥
भूरि प्रशंसा करहिं सबनि उत्साह बढ़ाई ।
देत सबहिं सनमान मैथिली प्रेम जनाई ॥९१॥
कहुँ आलस बश सीय सखिन के अंक शीश धरि ।
मूदि नयन आनन्द सहित सोवहिं सनेह भरि ॥९२॥
श्रवण प्रयन्त बिशाल ललित लोचन मन भावन ।
कजरारे छवि भरे सयन में लगत सुहावन ॥९३॥
कबहुँ परम प्रिय सखी मुदित दर्पण दिखलावैं ।
लखि लखि श्री मैथिली हृदय में अति सुख पावैं ॥९४॥
अति अनूप निज रूप निरखि मोहित सिय प्यारी ।
पावहिं परमानन्द प्रेम पूरित सुकुमारी ॥९५॥
सहज सुहावन सुछबि अलौकिक दृग वैदेही ।
पिय के बिरह वियोग विकल हा परम सनेही ॥९६॥
कहि प्रिय वैन रसाल सखी अंशन भुज धारी ।
सोच मगन मैथिली कदा पावत सुख भारी ॥९७॥
सुरपति की प्रेरणा विश्वकर्मा मन हारी ।
दिव्य अँगूठी रची परम सुन्दर द्युतिवारी ॥९८॥
मिथिलापति सोइ दई सिया को अति प्रिय जानी ।
पितु को पाय प्रसाद मैथिली मोद समानी ॥९९॥
करांगुली में निरखि कदा पिय को प्रिय रूपा ।
कबहूँ स्वप्न मझार लखत पिय सुघर अनूपा ॥१००॥

दो०–यही‍ं बनैं गे मोर पति, बिधि ने लिखा सम्हारि ।
निज मनमें निश्चय करहि, सीताशरण बिचारि ॥५॥

काहू बसनन माहिं निरखि पिय चित्र सुहावन ।
मन में करति बिचार यही प्रीतम मन भावन ॥ १ ॥
सुरपुर बासी देव करत सिय को सत्कारा ।
वन्दत चरण सनेह सहित भरि मोद अपारा ॥ २ ॥
मृग नयनी माधुर्य मयी मूरति मन भावन ।
पिक बैनी सुठि भाव भरित पालहिं व्रत पावन ॥ ३ ॥
सुषमा निधि मधुरांग मयी मिथिलेश किशोरी ।
प्रीतम प्रेम प्रमाद पगीं अतिसय रस बोरी ॥ ४ ॥
बोलत बचन रसाल मधुर प्रिय परम सुहावन ।
हे शुक पिक हंसिनी लखे मम पिय मन भावन ॥ ५ ॥
तुम देखे यदि प्राण नाथ मम दृगन सितारे ।
वर्णहु उन को रूप शील गुण परम सुखारे ॥ ६ ॥
यहि बिधि प्रेम प्रमोद पगीं पिय पद मन माहीं ।
ध्यावहिं "सीताशरण" सतत पुनि पुनि पुलकाहीं ॥ ७ ॥
सिय सहचरी अनेक अलौकिक रूप गुणाकर ।
सकल कला कल कुशल कामिनी सुभग सरसतर ॥ ८ ॥
तिन मधि कोइ योगिनी एक अति प्रेम समानी ।
सिय की बिह्वल दशा देखि अन्तर रुचि जानी ॥ ९ ॥
मेरी जीवन प्राण लाड़िली राजकिशोरी ।
चक्रवर्ति अवधेश ललन के प्रेम विभोरी ॥१०॥

याते हिय हर्षाय राम रघुवंश कुँवर को।
बिरचेव चित्र बिचित्र ललित मनहर छबिधर को ॥११॥
सो सिय को दिखलाय बहुरि तेहि लीन छिपाई।
वा सखि सों मैथिली बचन बोली दुलराई ॥१२॥
हे सुभगे गुण खानि सतत मो कहँ सुखदाई।
मम जीवन आधार प्राण वल्लभ रघुराई ॥१३॥
उनको चित्र विचित्र बहुरि तुम मोहिं दिखाओ।
मम हिय की वेदना विरहनल तपनि बुझाओ ॥१४॥
पिय की अति माधुर्य मई मूरति मन हारी।
वाही को अबलोकि कछुक चण होउँ सुखारी ॥१५॥
विन पिय परम प्रवीन बिमल बिधु बदन निहारे।
चण भर जीवन व्यर्थ सत्य यह बचन हमारे ॥१६॥
तलफत निशि दिन नयन चयन कबहूँ नहिं आवै।
विरह व्यथा अतिजोर दृगन जल धार बहावै ॥१७॥
बोली सो योगिनी सुनहु हे राजकुमारी।
जनि सोचहु मन माहिं मिलहिं गे पिय धनु धारी ॥१८॥
आशुतोष शिव शिवा कीन तुम अति सेवकाई।
उनकी कृपा प्रसाद मिलहिं पिय श्री रघुराई ॥१९॥
सुनि ताके बर बयन चयन प्रद ताप नसावन।
सुन्दर सुखद सनेह सने अतिसय मन भावन ॥२०॥
योगिनि सों कोइ सखी बदति आनन्द समाई।
जौं तव बानी सत्य होय तो सुनु हर्षाई ॥२१॥

श्री विदेह नन्दिनी कृपा मयी सरल नेह घर।
बिरद उदार अपार मनोरथ दानि सुखद वर ॥२२॥
मन भावन तोहि देहिं बसै शारद मुख माहीं।
होयँ बचन तव सत्य सखी संसय कछु नाहीं ॥२३॥
इमि कोइ दूसरि सखी स्वप्न देखेउ सुखदाई।
चक्रवर्ति नृप सुवन रसिक मणि श्री रघुराई ॥२४॥
गाधिसुवन के साथ अनुज युत मिथिला आये।
अमित नृपन के मध्य खण्डि शिव धनु छवि छाये ॥२५॥
श्री मिथिलाधिप लली मुदित माला पहिराई।
सुर मुनि जय जय करत सुमन बर्षत हर्षाई ॥२६॥
सखि गण आरति करैं युगल छबि लखि बलि जावें।
पुर नर नारि सनेह सने आनन्द समावें ॥२७॥
जनक पठाये दूत अवध पति पास सप्रेमा।
तिन वरणे सब चरित लखन रघुवर की क्षेमा ॥२८॥
श्री दशरथ महिपाल सजाई बिपुल बराता।
आये मिथिला माहिं मिले रघुवर युत भ्राता ॥२९॥
रघुनन्दन मैथिली केर शुभ भयो बिबाहू।
सचराचर सुख मगन तिहूँ पुर भरेउ उछाहू ॥३०॥
सकल सखिन के साथ अवध गमनी सिय प्यारी।
नित नव होत बिहार रमत पिय अवध विहारी ॥३१॥
प्रिया प्रेम परतन्त्र बने आधीन रसिक वर।
राम भानु कुल कमल अमल अनवद्य सु छबि धर ॥३२॥

सिय रुचि पालन करत सतत अवधेश कुँवर वर।
पावत परमानन्द प्रेम पूरक उदार तर ॥३३॥
इमिं सुन्दर वर स्वप्न सखी जब सियहिं सुनायो।
सुनि मिथिलाधिप लली हृदय अति आनँद पायो ॥३४॥
बोलीं बचन बिनोद बलित सुनु खन्जन नैनी।
शिव प्रसाद हो सत्य स्वप्न तेरो पिक बैनी ॥३५॥
तो हम तव हित करब सदा रुचि रखब तिहारी।
पूर्ण मनोरथ करब प्रतिज्ञा सुदृढ़ हमारी।३६॥
सुनि सिय के सुचि बैन अयन सुख सरस सुहावन।
बोली सो वर बाल बचन प्रमुदित मन भावन ॥३७॥
मम पालित सुक पच्छि बात यों कहति सुनाई।
वैदेही भर्त्तार होहिंगे श्री रघुराई ॥३८॥
सुनि ताके वर बचन रचन बोली सखि दूजी।
तव शुक बानी सत्य होय तो सिय रुचि पूजी ॥३९॥
तेरो वांछित सकल लली सों मैं कर बावौं।
उनकी कृपा कटाच्छ सदा हम तुम सुख पावौं ॥४०॥
लच्छण देखन हार वाम एक दिन एक आई।
अमित अलिन को हाथ देखि लच्छण बतलाई ॥४१॥
श्री वैदेही केर सखिन जब यह सुधि पाई।
करि स्वागत मैथिली पास तेहि गईं लिवाई ॥४२॥
पुनि सखियन ने कहा कहहु लच्छण सिय केरे।
बोली सो वर बाम वचन मृदु सरस घनेरे ॥४३॥

चक्रवर्ति नृपसुवन संग सिय को शुभ ब्याहू।
हो वै गो अस जानि परत बहु होय उछाहू ॥४४॥
प्रीतम परम प्रवीन प्यार इनको बहु करिहैं।
रहि इनके परतन्त्र हृदय में आनँद भरिहैं ॥४५॥
सुनि वाके प्रिय बचन बिहसि बोली सिय प्यारी।
बानी बिमल विशेष मधुर वर सुधा सँवारी ॥४६॥
अहो बुधे तव बचन सत्य मम अति हित कारी।
होवें गे यदि कदा परम मुद मंगल कारी ॥४७॥
तौ सजनी हम सदा परम हित करब तिहारो।
सत्य बचन यह मोर हृदय में दृढ़ करि धारो ॥४८॥
हे पीनस्तनि मीन नयनि पिक बैनि वाम वर।
तव सामुद्रिक शास्त्र बचन सर्वदा सत्य तर ॥४९॥
मृषा कदा नहिं होहिं लहौ जग में यश भारी।
सतत सकल सत्कार करहिं तुम्हरो सुकुमारी ॥५०॥
सामुद्रिका सु विज्ञ बचन जिमि कहे सुहावन।
तिमि ज्योतिषिनी अली एक बोली मन भावन ॥५१॥
सुनि ताकी अनुराग भरी बानी सुख दाई।
हँसि बोलीं मैथिली वाहि अति नेह बढ़ाई ॥५२॥
ज्योतिष शास्त्र सुविज्ञ भली बिधि तुम मृगनयनी।
सत्य बचन यदि होहिं कदा सब को सुख दयनी ॥५३॥
तौ हम तव प्रिय करहिं देहिं सम्पति अधिकाई।
पूजैं बहु द्विज तियन बसन भूषन पहिराई ॥५४॥

दइहैं मन भावतो तुमहिं इमि कहि वर बानी ।
पतिव्रता मैथिली सकल सखियन सनमानी ।।५५।।
सुनि सियके शुचि बयन अखिल मृग लोचनि वामा ।
भरीं परम अह्लाद लहैं अति सय अभिरामा ।।५६।।
सुनि शुभ चर्चा जनक लली आनन्द समानी ।
बिपुल दत्तिणा दीन सबनि बहु बिधि सनमानी ।।५७।।
लहि सिय को सत्कार सकल सखि सुमुखि सयानी ।
नृप बाला समुदाय हृदय में अति हर्षानी ।।५८।।
रघुकुल सागर चन्द्र सरिस रघुवीर प्रिया के ।
लगीं करन गुण गान करन मिलि सकल सिया के ।।५९।।
मनमें करहिं बिचार सकल इमि राज कुमारी ।
इनकी कृपा कटात्त पाय श्री अवध बिहारी ।।६१।।
मिलिहैं हम सब काहिं सुदृढ़ यह आश हमारी ।
जिनहिं लागि जप ध्यान किये तप व्रतन सुखारी ।।६२।।
ताको सुफल स्वरूप प्राण वल्लभ नृप नन्दन ।
मिलिहैं श्री रघुवीर हमनि को जनमन रन्जन ।।६३।।
जनक लाड़िली संग मनोरथ पूर्ण हमारे ।
करिहैं जीवन नाथ रसिक वर अति सुकुमारे ।।६४।।
इनहीं की अति कृपा प्यार हम को निज दइहैं ।
नृप किशोर चितचोर चतुर उर लगि सुख लइहैं ।।६५।।
यहि बिधि सब वर बाल आपने हिय अस चाहैं ।
पावहिं परमानन्द सिया पद प्रीति निवाहैं ।।६६।।

निज उपास्य सिय राम मध्य सौहार्द बढ़ावन।
युगल रसिक रस रहस केलि कौतुक सरसावन ॥६७॥
याही ते मैथिली चरण पंकज रति करहीं।
सेवहिं सखी स्वरूप हृदय में आनँद भरहीं ॥६८॥
श्री विदेह नृप लली शील गुण बश सब बाला।
सिय को अति आदरहिं करहिं बहु चरित रसाला ॥६९॥
इमि निज सखियन केर भाव लखि जनक कुमारी।
करहिं सबनि अति प्यार हृदय प्रमुदित सुकुमारी ॥७०॥
जेहि सखि सों बतरायँ सिया सौहार्द अधिक भरि।
सो निज गुनि सौभाग्य परम पद कंज शीशधरि ॥७१॥
अमित जनम के सुकृत उदय भै आज हमारे।
निज उपास्य सर्वेश प्रिया पद पद्म निहारे ॥७२॥
सीताराम सुजान सकल जग जीवन दानी।
परम तत्त्व परमीश परम गति सुख रस खानी ॥७३॥
विश्व प्रकाशक देव दनुज नर मुनि जग स्वामी।
परमानन्द स्वरूप सकल उर अन्तर यामी ॥७४॥
सुख समुद्र में मगन दशा उन ने यह पाई।
"सीताशरण" सनेह सनी सिय पद सेवकाई ॥७५॥
करहिं हृदय भरि मोद सखी सब अति रस पागी।

सादर प्रेम समेत ललित सिय पिय रस रासा ।
श्रवण कियो अनुराग भरित तुम सहित हुलासा ॥७८॥
यहि ते या जग माहिं आप सम दूसर नाहीं ।
देखौ स्वयं बिचारि आप अपने मन माहीं ॥७९॥
श्री रघुवर की प्रिया मैथिली जनक दुलारी ।
तासु ललित रस रास कह्यो कछु मति अनुसारी ॥८०॥
यह रहस्य कमनीय सरस रसिकन मन भावन ।
परमानन्द स्वरूप परम पावन ते पावन ॥८१॥
श्री सियवर की कृपा कोर बिन कोउ न पावै ।
करि करि कठिन कलेश जोग तप त्याग दिखावै ॥८२॥
श्री सद्गुरु भगवान कृपा करि देहिं लखाई ।
एक मात्र सोइ लहै अपर साधन नहिं भाई ॥८३॥
ते बड़ भागी सुजन सतत जे सुनसिं जे गावैं ।
"सीताशरण" रसेश सिया पिय पद रति पावैं ॥८४॥
गाथा ललित रसाल अखिल अघ ओघ नसावन ।
नाशक भ्रम समुदाय युगल पद प्रेम बढ़ावन ॥८५॥
जे तजि सकल बिकार सदा यहि रस हिय ध्यावैं ।
निश्चय "सीताशरण" सिया सिय पिय ढिग जावैं ॥८६॥
युगल केलि कमनीय कठिन कलि कलुष नसावन ।
"सीताशरण सनेह सदन सुख स्वाद बढ़ावन ॥८७॥
वर्धक भजन सु भाव ललित भावना प्रदायक ।
समन सकल सन्ताप पाप नाशक सब लालक ॥८८॥

प्रीतम प्रीति प्रतीति रीति रति रस सुख दानी ।
"सीता शरण" सुजान रसिक जीवन सम मानी ॥८९॥
पीवत परमानन्द सहित जो यह रस पावन ।
बिहरत युगल स्वरूप हृदय बिच अतिमन भावन ॥९०॥
जयति स्वामिनी सीय सखिन सुख स्वाद प्रदायक ।
जय जय रसिक नरेश प्राण वल्लभ सब लायक ॥९१॥
जयति मैथिली मधुर मंजु मन मोहन मनहर ।
जय जय "सीताशरण" प्राण जीवन घन छबिधर ॥९२॥
जयति अलिन सुख दानि शील गुण रस की खानी ।
जय जय "सीताशरण" चपल पिय सारँग पानी ॥९३॥
जयति सरल सुकुमारि मृदुल चित अवनि कुमारी ।
जय जय "सीताशरण" रसिक लम्पट मन हारी ॥९४॥
जयति लाड़िली सीय स्वजन पालक रस रूपा ।
जय जय पिय चितचोर अमल अनवद्य अनूपा ॥९५॥
जयति कृपा गुण खानि सतत आश्रित जन पालक ।
जय जय "सीताशरण रसिक जीवन खल घालक ॥९६॥
जयति सजीवनि मूरि मोर सर्वस वैदेही ।
जय जय परम उदार रसिक मणि परम सनेही ॥९७॥
जयति जानकी जान जानकी जनक दुलारी ।
जय जय "सीताशरण" रमण पिय रास बिहारी ॥९८॥

दो०-जयति जयति जनकात्मजे, जय जय नृपति कुमार ।
वन्दौं सीताशरण नित, सिय पिय प्राणाधार ॥९९॥

दो०-जयति मैथिली लाड़िली, जय जय पिय चितचोर।
सीताशरण सनेह दै, कीजै रति रस बोर ॥६ख॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी बिलाशे श्री मैथिली पूर्व
राग विप्रमम्भ रस बिकाशे सीताशरण सुमति प्रकाशे
षष्टमोऽध्यायः सम्पूर्णमस्तु

* सप्तमोऽध्यायः *

* बिबाह रास प्रकरणम् *

छन्द रोला:-

बोले सूत सुजान सरस मन हरन सुबानी।
पावन पतित पुनीत करन हारी सुख खानी ॥ १ ॥
हे शौनक मुनिवृन्द सुनहु सब सावधान चित।
सिय पिय ब्याह रहस्य परम कमनीय अपरमित ॥ २ ॥
तदपि स्वमति अनुसार कहब हम तुमहिं सुनाई।
सुनहु सकल धरि ध्यान हृदय धरि सिय रघुराई ॥ ३ ॥
श्री हरि भक्त प्रधान कीर्तन कार महाना।
अखिल लोक उपकार निरत सब भाँति सुजाना ॥ ४ ॥
चक्रवर्ति अवधेश कुँवर श्री राम चरण रत।
रघुवर कृपा सु पात्र परम प्रिय कोह मोह गत ॥ ५ ॥
श्री नारद अस नाम सकल सुर असुर सु पूजित।
रसना अति कमनीय राम रघुवर यश कूजित ॥ ६ ॥

जानकी शरण दे.दूने २०.८.४०

जानकी शरण देहरादून

श्री केलि कुंज में शतरंज क्रीड़ा (४)

जानकी

जानकी शरण, देहरा दून
श्रृंगार कुँज
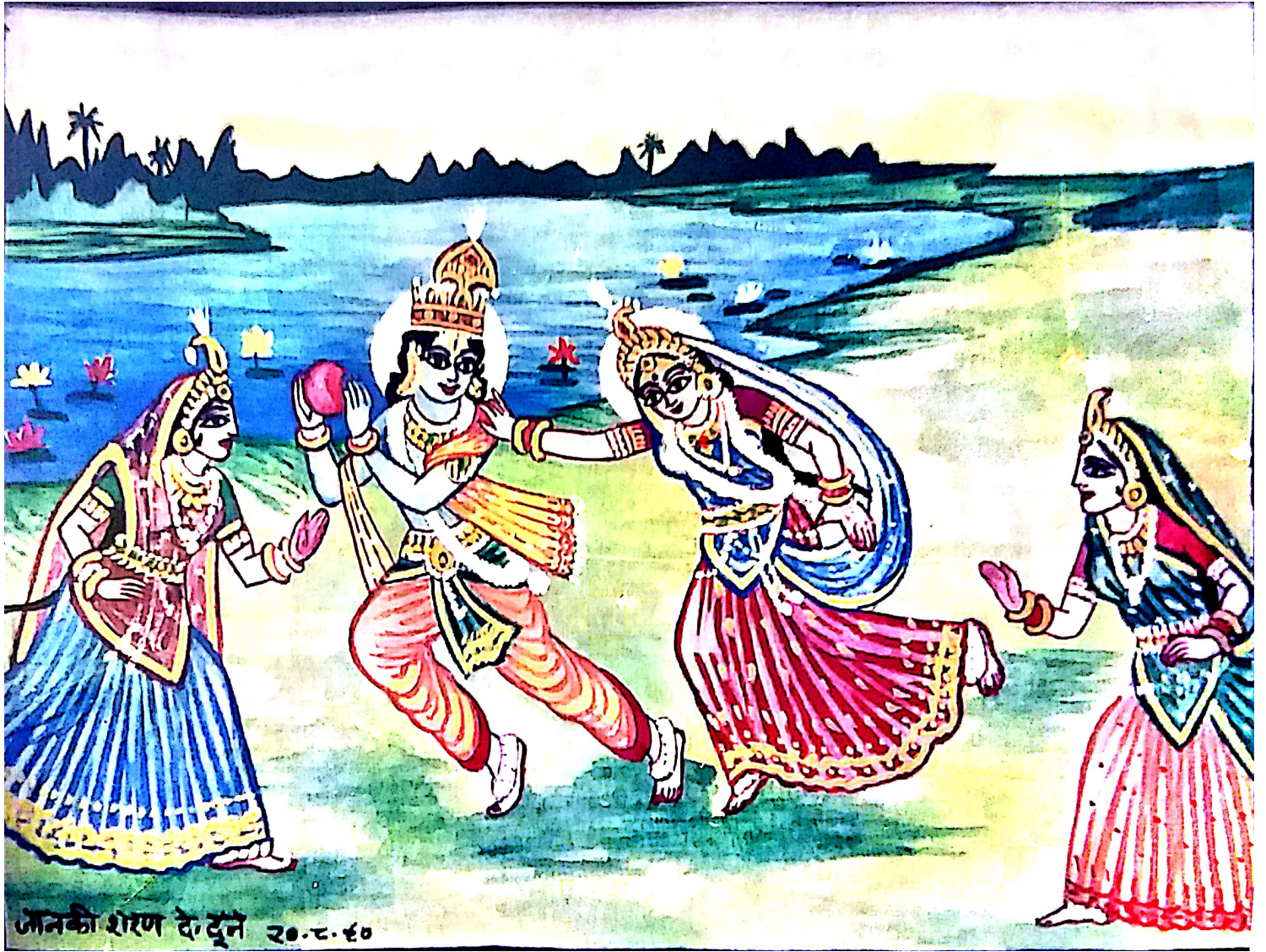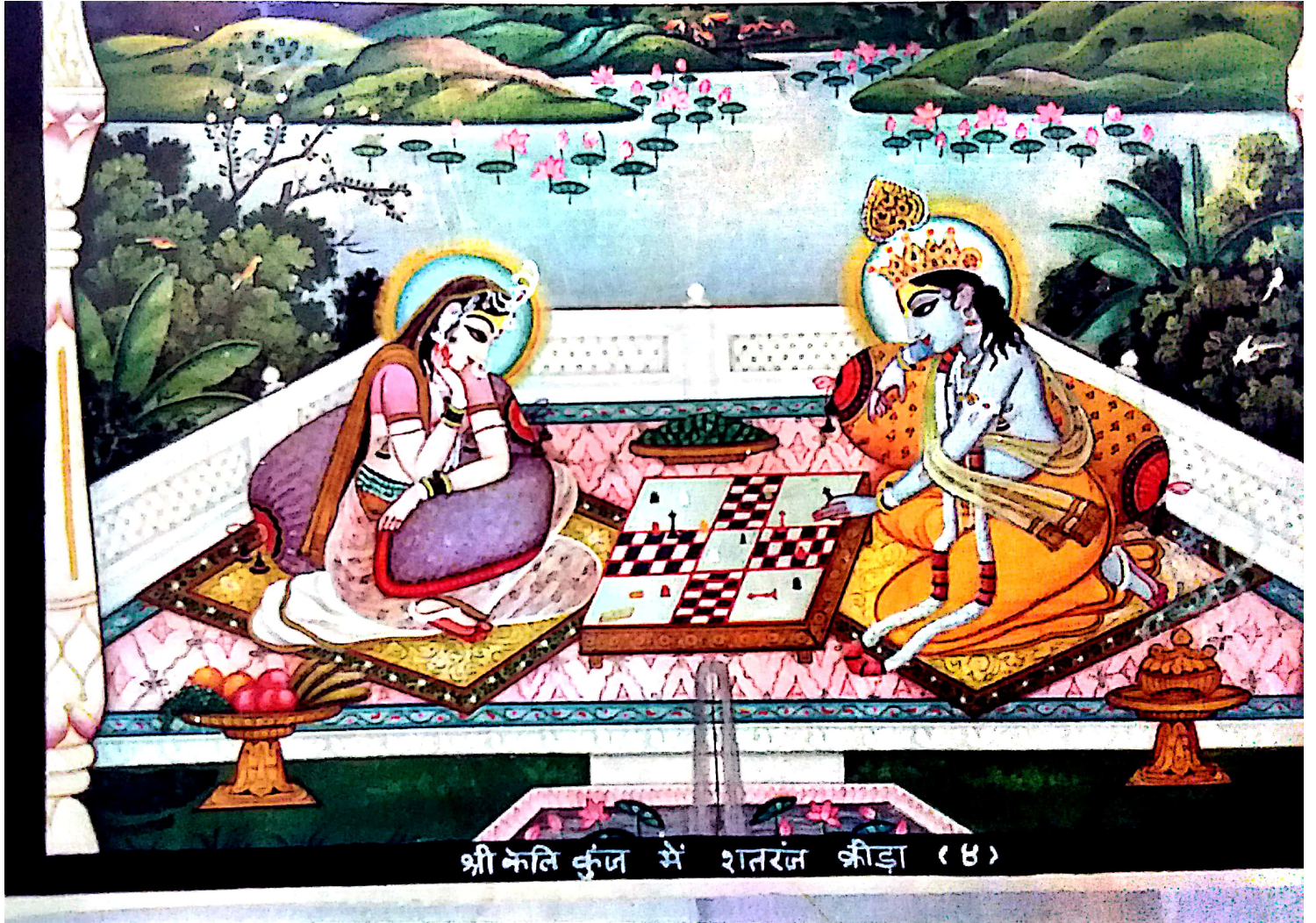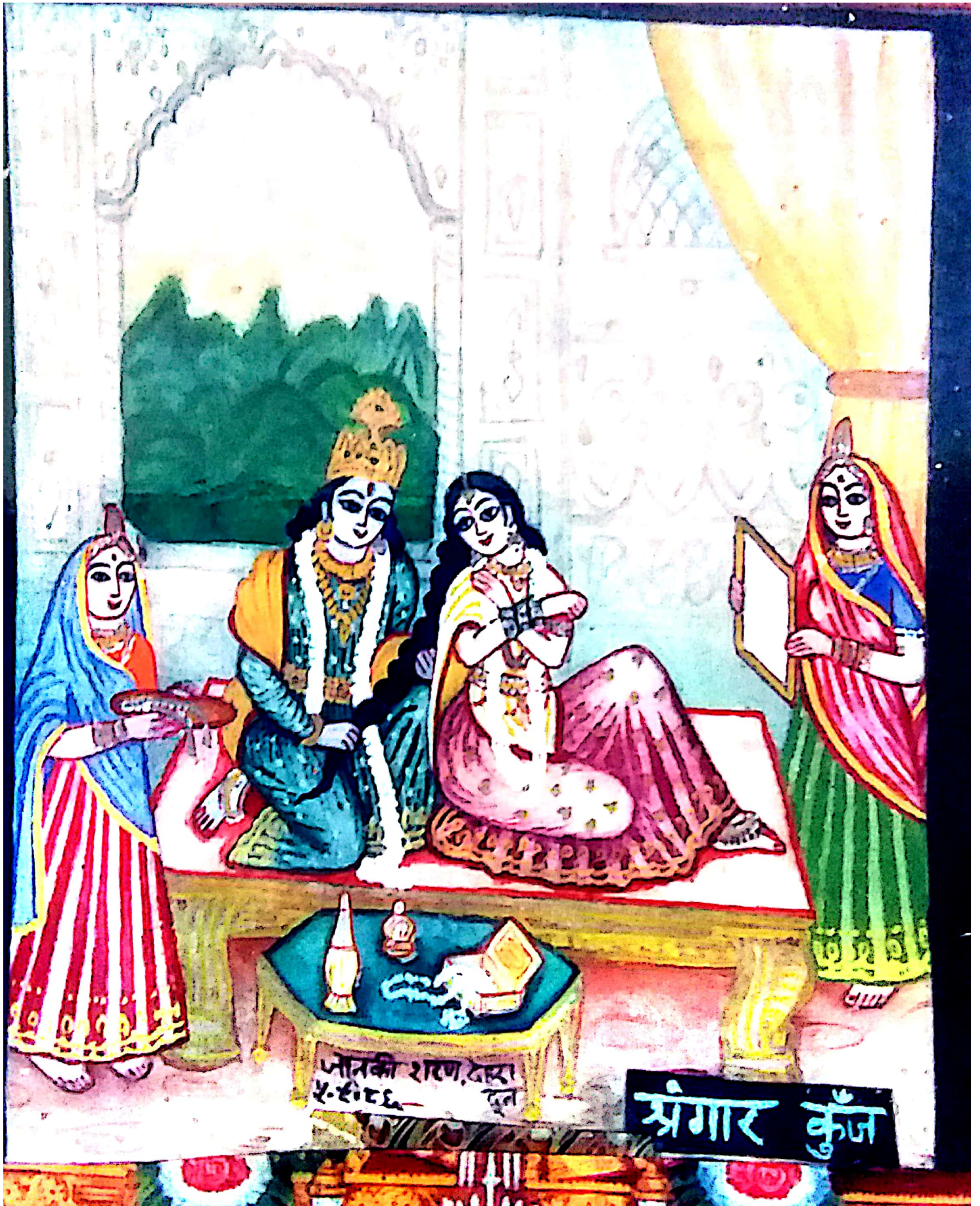
जानकी शरण
देहरादून ६/११/८८
सेज़ पर मान किये रसदानी
पिय जाचक कर जोरी मनावैं विनय करैं मृदु बानी

श्री शयन कुंज